॥ तस्मै नमः श्री गुरु गौतमाय ॥

श्री पुष्कर गौतमाश्रम सम्वाद

वर्ष - 20 अंक - 4 अक्टूबर-दिसम्बर 2025

15 अगस्त को ध्वजारोहण करते हुए

सभा के प्रारम्भ में महर्षि गौतम का पूजन करते हुए

नये ट्रस्टियों का स्वागत करते हुए

प्रबन्ध कारिणी समिति बेठक 31 अगस्त

प्रकाशक :

श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति, पुष्कर, अजमेर (राज.)

प्रबन्ध समिति भारतीय विद्या मन्दिर, पाली द्वारा संचालित

कृष्णा इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एवं इंजीनियरिंग (पॉलिटेक्निक कॉलेज)

त्रिवर्षीय इंजीनियरिंग डिप्लोमा

सिविल | मैकेनिकल | इलेक्ट्रीकल

प्रवेश योग्यता : प्रथम वर्ष : कक्षा 10 वीं उत्तीर्ण द्वितीय वर्ष : कक्षा 12 वीं (विज्ञान-गणित अथवा द्विवर्षीय आई. टी. आई)

भारतीय विद्या मन्दिर महिला बी.एड.कॉलेज, पाली

रामदेव बी. एड्. कॉलेज, जैसलमेर

भारतीय विद्या मन्दिर बी.एस.टी.सी.कॉलेज, पाली

कृष्णा प्रा. आई. टी. आई.

चिमनपुरा, पाली (राज.) फोन : 02932 258441 मो. 92144 91774, 97841 98474

मारवाड़ प्रा.आई. टी. आई., मारवाड़ ज.

ट्रेड : इलेक्ट्रिशियन, वायरमैन, डिजल मैकेनिक, अवधि 2 वर्ष, प्रवेश योग्यता 10 वीं उत्तीर्ण

भारतीय विद्या मन्दिर उच्च माध्यमिक विद्यालय, पाली

भारतीय विद्यापीठ माध्यमिक विद्यालय, पाली

भारतेन्दु कॉलेज, पाली मारवाड़

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान शिक्षा विभाग भारत सरकार (NIOS) द्वारा संचालित 10 वीं एवं 12 वीं उत्तीर्ण करें।

मान्य विश्वविद्यालय द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रम से बी. ए., बी. कॉम, एम. ए, एम. कॉम, एम. ए. (एज्यूकेशन) उत्तीर्ण करे।

गोरधन जोशी
प्रबन्ध निदेशक
87693 19941

सुनील जोशी
सचिव
92144 91774

हेमन्त जोशी
निदेशक
92143 76663

शुभम जोशी
उपाध्यक्ष
90010 81912

शिवम जोशी
समन्वयक
97841 98474

सीताराम जोशी
अध्यक्ष
98757 26002

कृष्णा कॉलेज, राम नगर, पाली

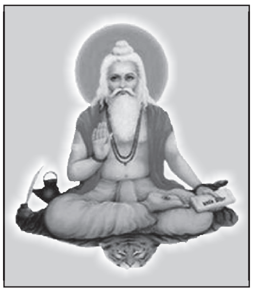

।। तस्मै नमः श्री गुरु गौतमाय।।

श्री पुष्कर गौतमाश्रम सम्वाद

आश्रम दूरभाष : 0145-2772112,

व्हाटसेप नं. 9352796455

श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति का त्रैमासिक मुखपत्र

(सदस्यों में निःशुल्क प्रसारण)

वर्ष - 20 अंक - 4 अक्टूबर - दिसम्बर 2025

E-mail : gautamashrampushkar@gmail.com Web : www.gautamashrampushkar.com

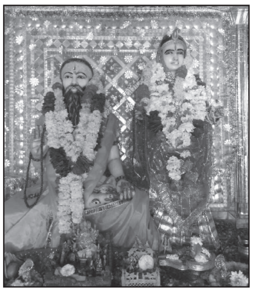

संरक्षक :
सीताराम जोशी
पाली
9414590841
9875726002

परामर्श :
मोहनराज उपाध्याय
लाम्पोलाई
9414119195
7665019195

प्रबन्धन :
बालकृष्ण शर्मा
अजमेर
9413345016

सम्पादक :
शिवराज चाष्टा
अजमेर
9414284277

सह-सम्पादक :
देवराज शर्मा
पाली
9461717418

उप-सम्पादक :
सन्दीप जोशी
अजमेर
9251477334
9001195241

सम्पादकीय......

सम्मानित ट्रस्टीगण तथा समाज बन्धु

सादर वन्देमातरम

श्री पुष्कर गौतमाश्रम संवाद पत्रिका का बीसवें वर्ष का यह चतुर्थ एवं अंतिम अंक आप सभी ट्रस्टीगण तथा समाज के पाठक बन्धुओं के मननार्थ प्रस्तुत है। अंक में श्री पुष्कर गौतमाश्रम सम्बन्धी गत तीन माह की गतिविधियों और उपलब्धियों के अतिरिक्त आध्यात्मिक तथा सामाजिक विषयों पर सारगर्भित लेख भी प्रस्तुत हैं। आशा है सभी पाठक बन्धु इनसे लाभान्वित होंगे।

कार्तिक पूर्णिमा पर जो इस बार 5 नवम्बर को है पुष्कर स्नान का विशेष महत्व है। इसी दिन श्री पुष्कर गौतमाश्रम समाज की आम सभा का आयोजन करता है। समाज बन्धुओं से आग्रह है कि इस अवसर पर पुष्कर स्नान व आम सभा में सम्मिलित होकर तथा महर्षि गौतम का दर्शन कर पुण्य के भागी बनें।

जय महर्षि गौतम,

भवदीय
शिवराज चाष्टा
सम्पादक

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	- 1
गौतमाश्रम समाचार	- 2
प्रबधन्कारिणी समिति बैठक	- 8
महामंत्री की कलम से	- 11
वेद मंत्र - आ नो भद्रा कतवो यन्तु विश्वतः	- 12
गीता चिन्तन-कर्म फलों का त्याग	- 13
विश्व पटल पर हिन्दी के बढ़ते कदम	- 14
पीढ़ियों का बदलाव	- 16
प्राणायाम द्वारा आयु की वृद्धि	- 17
तीर्थयात्रा-नैमिषारण्य धाम	- 18
कृष्णा माता देवकी की व्यथा	- 20
कर्म प्रधान बिस्म करि राखा	- 22
नवरात्र की आध्यामिक्ता एवं वैज्ञानिकता	- 25
मृत्यु का सच	- 27
पौराणिक कथा-श्रीकृष्ण दौड़े चले आये	- 28
सिंहासन बत्तीसी	- 30
पंचतंत्र से - प्रेरक कहानी	- 31

गौतमाश्रम समाचार............

श्री पुष्कर गौतमाश्रम की माह जुलाई 2025 से सितम्बर 2025 की तीन माह अवधि की प्रमुख उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ न्यासी महानुभावों तथा समाज बन्धुओं की सूचनार्थ निम्न प्रकार है–

1. इन तीन महिनों की अवधि में कुल 8436 यात्रियों को आवासीय सुविधायें प्रदान की गई जिसमें 121 यात्री बसों के यात्री भी सम्मलित हैं। इन 8436 यात्रियों में से 1012 यात्री हमारे समाज बन्धु थे एवं शेष 7424 अन्य समाज के थे। इन तीन महीनों की अवधि में 03 श्रीमद् भागवत् कथा, 01 प्रबन्ध कारिणी समिति की मीटिंग का आयोजन हुआ जिससे आश्रम को 18,85,065/–की आय प्राप्त हुई है।

2. उपरोक्त अवधि में समाज बन्धुओं की ओर से विभिन्न मदों में 8,07,414/– रुपये की राशि आश्रम विकास एवं भेंट सहयोग स्वरूप प्राप्त हुई है। इसमें 1000 व उससे ऊपर की राशि प्रदाताओं का विवरण निम्न प्रकार है।

क्र.सं	दानदाता	निवास	राशि	मद
1	श्रीमती मीनाक्षी त्रिपाठी	जयपुर	500000/–	आश्रम विकास कोष
2	श्री अनमोल उपाध्याय	कानपुर	100000/–	आश्रम ध्रुव कोष
3	श्री परमेश्वर जी उपाध्याय	अजमेर	100000/–	आश्रम ध्रुव कोष
4	श्री नवलकिशोर जी गोस्वामी	जयपुर	5100/–	कार्तिक पूर्णिमा स्वरूप
5	श्री हनुमान प्रसाद जी शर्मा	अजमेर	1100/–	भोजनालय स्वरूप
6	श्री मुकेश जी उपाध्याय	नागौर	1100/–	भोजनालय स्वरूप
7	श्री दिनेश जी जोशी	अजमेर	1100/–	भेंट स्वरूप

3. श्री पुष्कर गौतम आश्रम की अनुपम योजना ''अन्नक्षेत्र स्थाई कोष'' के अन्तर्गत जून 2025 तक 459 समाज बन्धुओं ने इस योजना से जुडकर प्रत्येक ने दस हजार रूपये की राशि स्थाई कोष में जमा कराकर अपने पूर्वजों की पुण्य तिथि व अन्य उपलक्ष में प्रतिवर्ष नियत तिथि पर छात्रावासी विप्र बटुकों के भोजन के माध्यम से श्रद्धासुमन अर्पित किये जाने अथवा स्मरण किये जाने हेतु इस योजना में भाग लिया है। जुलाई 2025 से सितम्बर 2025 की अवधि में 03 और समाज बन्धुओं ने इस योजना में भाग लिया है जिनका विवरण निम्न प्रकार है:–

अन्नक्षेत्र स्थाई कोष में जुड़ने वाले सहभागी

क्र.सं.	सहभागी का नाम	निवासी	पुण्य स्मृति में	तिथि
1	श्री सुरेश कुमार भोलाराम जी व्यास	वाशिम महाराष्ट्र	स्व. भोलाराम जी वंशीलाल जी व्यास	माघ सुदी दशमी
2	श्री सुरेश कुमार भोलाराम जी व्यास	वाशिम महाराष्ट्र	स्व. श्री गोविन्द कुमार जी भोलाराम जी व्यास	ज्येष्ठ सुदी अष्टमी
3	श्री जगदीश जोशी, श्री मोहित जोशी	भीलवाडा	स्व. श्री मदन लाल जी जोशी	01 जून

4. उपरोक्त योजना के अन्तर्गत समाज बन्धुओं की ओर से बताई गई तिथि पर उनके प्रियजनों की स्मृति में गौतमाश्रम द्वारा छात्रावासी विप्र बटुकों को भोजन कराकर श्रद्धासुमन अर्पित किये जाते रहे हैं। जुलाई 2025 से सितम्बर 2025 में आने वाली पुण्य तिथियों एवं जन्म उत्सव पर जिनका पुण्य स्मरण किया गया उनका पूर्ण विवरण निम्न प्रकार है :–

जुलाई माह की पुण्य तिथि/जन्म दिवस

क्र.सं.	सहभागी का नाम	निवासी	पुण्य स्मृति/जन्म दिवस	तिथि
1	श्रीमती वृन्दा त्रिवेदी	सिकन्द्राबाद	जन्मोत्सव (पुत्री)	02 जुलाई
2	श्री सत्यनारायण जी, रमेश चन्द्र जी पंचारिया	अमरावती	स्व. श्रीमती सीता देवी	आषाढ़ शुक्ल षष्ठी
3	श्री राधेश्याम जी शर्मा	जयपुर	स्व. श्री गोकुलचन्द जी शर्मा	आषाढ़ शुक्ल सप्तमी
4	श्री विष्णु जी गील	अजमेर	स्व. श्री रामदयाल जी गील	आषाढ़ शुक्ल अष्टमी
5	श्रीमती कृष्णा त्रिपाठी	भीलवाडा	स्व. श्रीमती उगम बाई पत्नी स्व. गणेश शंकर जी	आषाढ़ शुक्ल अष्टमी
6	श्री मदन लाल जी शर्मा	उदयपुर	स्व. श्री सोमेश्वर प्रसाद जी	आषाढ़ शुक्ल अष्टमी
7	श्री रमेश माया जी व्यास	चितौड़गढ़	स्व. श्री नरेन्द्र कुमार जी व्यास	आषाढ़ शुक्ल दशमी
8	श्री जुगल किशोर जी, सत्यनारायण जी, मोहनराज जी उपाध्याय	लाम्पोलाई	स्व. श्रीमती धूली देवी पंचारिया	आषाढ़ शुक्ल एकादशी
9	श्री कैलाश चन्द्र जी त्रिपाठी	अजमेर	स्व. संतोष बाई गील (चितौड़)	आषाढ़ शुक्ल एकादशी
10	श्री रूपेश कुमार व्यास	अमरावती	स्व. श्री बालकिशन जी व्यास	आषाठ शुक्ल एकादशी
11	श्री मुरलीधर जी, राजेशजी उपाध्याय	हैदराबाद	श्रीमती मीना अशोक कुमार जी शर्मा (आकोला)	आषाढ़ शुक्ल द्वादशी
12	श्री नन्द किशोर जी, रविकुमार जी उपाध्याय	सोलापुर	स्व. श्री रामदयाल जी उपाध्याय	आषाढ़ शुक्ल द्वादशी
13	श्री सुरेशचन्द जी, अरविन्द जी, अनिल जी, कैलाश चन्द जी जोशी	जहाजपुर भीलवाडा	स्व. श्रीमती सोहन देवी पत्नी स्व.श्री देवीलाल जी जोशी	आषाढ़ शुक्ल द्वादशी
14	श्री कन्हैया लाल जी, रिषभ जी उपाध्याय (कुट्टी वाले)	ब्यावर	स्व. श्री सूरजकरण जी	आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी
15	श्री गुर्जर गौड़ ब्राह्मण समाज	सोलापुर	गुरू पूर्णिमा के पावन अवसर पर	आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा
16	श्री महावीर प्रसाद जी शर्मा	कोटा	स्व. श्री श्याम मनोहर जी शर्मा	श्रावण कृष्ण द्वितीया
17	श्री सत्यप्रकाश जी दुबे	उदयपुर	स्व. श्री प्रहलाद जी दुबे	श्रावण कृष्ण चतुर्थी
18	श्रीमती कमला त्रिपाठी	किशनगढ़	स्व. श्री ब्रह्मदत्त जी त्रिपाठी	श्रावण कृष्ण चतुर्थी
19	श्री सुरेश चन्द्र जी जोशी	भीलवाडा	स्व. श्री बजरंग लाल जी जोशी	श्रावण कृष्ण पंचमी
20	श्री राकेश जी उपाध्याय, शुभम जी जोशी	बिजयनगर	स्व. श्री सुभाष जी उपाध्याय	श्रावण कृष्ण पंचमी
21	श्री वेद प्रकाश जी त्रिपाठी	अजमेर	स्व. श्री मदन मोहन जी त्रिपाठी	श्रावण कृष्ण सप्तमी
22	श्री गुर्जरगौड़ सांस्कृतिक संगठन	इन्दौर	अन्नक्षेत्र स्थाई सहयोग	श्रावण कृष्ण सप्तमी
23	श्री शुभम जोशी	पाली	स्व. श्री रविन्द्र कुमार जोशी	श्रावण कृष्ण अष्टमी
24	श्री भागीरथ जी उपाध्याय	चैन्नई	स्व. श्रीमती केसर बाई उपाध्याय	श्रावण कृष्ण नवमी

25	श्री कृष्ण वल्लभ जी शर्मा	ब्यावर	स्व. श्रीमती सत्यनारायणी देवी	श्रावण कृष्ण नवमी
26	श्री जे. पी. त्रिवेदी	सिकन्दराबाद	स्व. श्री बद्रीनारायण जी त्रिवेदी	श्रावण कृष्ण दशमी
27	श्री बंकटलाल जी	सीकर	स्व. श्रीमती सम्पति देवी पत्नी श्री बंकरलाल जी	श्रावण कृष्ण दशमी
28	श्रीमती आशा शर्मा	शाहपुरा (भीलवाडा)	स्व. श्री भूरालाल जी पंचोली	श्रावण कृष्ण त्रयोदशी
29	श्री अनिल कुमार जी, मुकेश कुमार जी पंचारिया	दांतडा, अजमेर	स्व. श्रीमती चन्दा देवी पंचारिया	श्रावण कृष्ण अमावस्या
30	श्री ओमप्रकाश जी पंचोली	रतलाम	स्व. श्री औंकार लाल जी पंचोली	श्रावण शुक्ल द्वितीया
31	श्री नवीन गिरधारी लाल सिवाल	सोलापुर	स्व. श्रीमती सुगनी बाई पत्नी श्री शिवकरण जी सिवाल	श्रावण शुक्ल द्वितीया
32	श्री सुनील जी शर्मा	सिकन्द्राबाद	जन्मोत्सव (सालेसाब)	26 जुलाई
33	श्री प्रकाश जी पंचारिया	सोलापुर	स्व. श्रीमती पदमाबाई पंचारिया	श्रावण शुक्ल तृतीया
34	श्री घेवर चन्द जी, शिवकुमार जी उपाध्याय	गौहाटी (आसाम)	स्व. श्रीमती अम्बिका देवी उपाध्याय	श्रावण शुक्ल तृतीया
35	श्री विद्याधर जी चौबे	पुर (भीलवाडा)	स्व. श्री कजोड़मल जी चौबे	श्रावण शुक्ल चतुर्थी
36	श्रीमती इन्दु शर्मा	अजमेर	स्व. श्री मोहनलाल जी	श्रावण शुक्ल सप्तमी
37	श्री अनिल कुमार जी, मुकेश कुमार जी पंचारिया	दांतडा(अजमेर)	स्व. श्री लादूराम जी पंचारिया	श्रावण शुक्ल सप्तमी

अगस्त माह की पुण्य तिथि/जन्म दिवस

1	श्री नारायण लाल जी शर्मा	जयपुर	स्व. श्रीमती भंवरी बाई व्यास	श्रावण शुक्ल अष्टमी
2	श्री विजय कुमार जी तिवाडी	औरंगाबाद	स्व. श्री हरि नारायण जी	श्रावण शुक्ल नवमी
3	श्री राजेन्द्र जी शर्मा	मदनगंज किशनगढ	स्व. श्रीमती गुलाब देवी	श्रावण शुक्ल नवमी
4	श्री देवेन्द्र जी उपाध्याय	हैदराबाद	स्व. श्री मोतीलाल जी उपाध्याय	श्रावण शुक्ल दशमी
5	श्री अनिल जी भारद्वाज पुत्र स्व. श्री धीरेन्द्र जी शर्मा	शाहपुरा (भीलवाडा)	स्व श्री धीरेन्द्र जी शर्मा (भारद्वाज)	श्रावण शुक्ल दशमी
6	श्री बालकृष्ण जी शर्मा	जूनिया (अजमेर)	स्व. श्रीमती मूली देवी सत्यनारायण जी	श्रावण शुक्ल एकादशी
7	श्री प्रदीप कुमार जी	इन्दौर	स्व. श्रीमती सावित्री देवी	श्रावण शुक्ल एकादशी
8	श्री हनुमान प्रसाद जी शर्मा	हिसार	स्व. श्री अभीलाल जी शर्मा	श्रावण शुक्ल एकादशी
9	श्रीमती विद्या जोशी	जोधपुर	स्व. श्री गजेन्द्र जी जोशी	श्रावण शुक्ल एकादशी
10	श्री रमेश माया जी व्यास	चितौड़गढ़	स्व. श्री शान्ति लाल जी व्यास पुत्र श्री गोवर्धन लाल जी व्यास	श्रावण शुक्ल पूर्णिमा

11	श्री सुरेशचन्द जी, रमेशचन्द जी, दिनेशचन्द जी तिवाड़ी	ब्यावर	स्व. श्री छगन लाल जी तिवाड़ी	भाद्रपद कृष्ण द्वितीया
12	श्री ललित देव जी, देवराज जी जोशी	पाली	स्व. श्री मोहन लाल जी शर्मा एवं ककु देवी पाईवाल	भाद्रपद कृष्ण तृतीया
13	श्री डॉ. लखन जी शर्मा	कोटा	स्व. प. श्री घनश्याम जी शर्मा	भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी
14	श्रीमती वीणा कुमारी मिश्रा एवं नीरज, नीलम, अमित मिश्रा	उदयपुर	स्व. श्री अशोक कुमार जी मिश्रा	भाद्रपद कृष्ण पंचमी
15	श्री दीपक जी तिवाड़ी	अहमदाबाद	स्व. श्री राधाकिशन जी तिवाडी	भाद्रपद कृष्ण षष्ठी
16	श्री फूलचन्द जी श्रवण लाल जी, मदन लाल जी, नाराणिया जोशी	टेमलियावास कलां, पाली	स्व. श्री गोवर्धन लाल जी जोशी	भाद्रपद कृष्ण नवमी
17	श्रीमती श्यामा शर्मा	अजमेर	स्व. श्रीमती इदु कंवर त्रिपाठी	भाद्रपद कृष्ण एकादशी
18	श्रीमती पुष्पा देवी श्री ओम प्रकाश जी शर्मा	नीमच	स्व. ससुर श्री मूलचन्द जी चौबे	भाद्रपद कृष्ण एकादशी
19	श्री प्रभु दयाल जी सांखी	जोधपुर	स्व. श्री लाखारामजी सांखी	भाद्रपद कृष्ण अमावस्या
20	श्री ओमप्रकाश जी पंचोली	रतलाम	जन्म दिवस	भाद्रपद शुक्ल द्वितीया
21	श्रीमती सरजू बाई जोशी	भीलवाडा	स्व. श्री भूरालाल जी जोशी	भाद्रपद शुक्ल तृतीया
22	श्री प्रकाश जी पंचारिया	सोलापुर	स्व. श्री देवीदास जी जवाहर जी पंचारिया	भाद्रपद शुक्ल पंचमी
23	श्री गोपाल कृष्ण जी उपाध्याय	भीलवाडा	स्व. श्री लक्ष्मी नारायण जी एवं श्रीमती सीता देवी उपाध्याय	भाद्रपद शुक्ल षष्ठी
24	श्री सुरेशजी, गोविन्द जी जोशी	यादगीर, महाराष्ट्र	स्व. श्री रामानुज जी जोशी	भाद्रपद शुक्ल सप्तमी
25	श्री अनिल कुमार जी जोशी	अजमेर	श्रीमती कान्ता देवी	भाद्रपद शुक्ल सप्तमी
26	श्री ओमप्रकाश जी पंचोली	घोसवास, रतलाम	स्व. श्रीमती ललिता देवी	भाद्रपद शुक्ल अष्टमी

सितम्बर माह की पुण्य तिथि/जन्म दिवस

1	श्रीमती आशा प्रेम नारायण जी व्यास	इन्दौर	स्व. श्री राम चन्द्र जी व्यास	भाद्रपद शुक्ल नवमी
2	श्रीमती गीता देवी त्रिपाठी	नाथद्वारा	स्व. वैध श्री भगवानदास जी त्रिपाठी	भाद्रपद शुक्ल नवमी
3	श्री माणकलाल जी, घेवरचंद जी किशनलाल जी भाऊराम जी सांखी	जोधपुर	स्व. श्री पेमा राम जी सांखी	भाद्रपद शुक्ल नवमी
4	श्री नवल मांगीलाल जी उपाध्याय	बड़ौदा	स्व. श्रीमती सावित्री देवी	भाद्रपद शुक्ल एकादशी
5	श्री प्रदीप जी उपाध्याय	रतलाम	स्व. श्रीमती चन्द्रकला पत्नी बालकृष्ण जी उपाध्याय	भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी
6	श्री कैलाश जी उपाध्याय	बोरीवली, मुम्बई	स्व. श्रीमती डगा देवी उपाध्याय (फोगड़ी)	भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा

7	श्रीमती सरला देवी व्यास	अजमेर	स्व. श्री जनमेय जी व्यास	आश्विन कृष्ण द्वितीया
8	श्रीमती मूली देवी की प्रेरणा से पुत्र धरणीधर जी, कमल जी, विमल जी, सुभाष जी तिवाड़ी	उदयपुर	स्व. श्री मोती लाल जी तिवाड़ी	आश्विन कृष्ण तृतीया
9	सौ छाया शर्मा	पूना	स्व. श्रीमती तुलसा बाई शर्मा	आश्विन कृष्ण चतुर्थी
10	श्री अपार कमल जी उपाध्याय	रतलाम	स्व. कमल जी विठ्ठलदास जी उपाध्याय	आश्विन कृष्ण चतुर्थी
11	श्री गोविन्द अथर्व जी चौबे	पूना	स्व. श्री रामगोपाल जी चौबे	आश्विन कृष्ण पंचमी
12	श्री गोविन्द कुमार जी, सुरेश कुमार जी व्यास	महाराष्ट्र	स्व. श्रीमती धनकुंवर देवी पत्नी श्री भोलारामजी व्यास	आश्विन कृष्ण पंचमी
13	श्री गोपाल कृष्ण जी जोशी	अजमेर	स्व. श्रीमती शान्ति देवी	आश्विन कृष्ण षष्ठी
14	डा0 कैलाश चन्द जी त्रिपाठी	अजमेर	स्व. श्रीमती धूली बाई पत्नी स्व. श्री रामचन्द्र जी त्रिपाठी	आश्विन कृष्ण सप्तमी
15	श्री जुगल किशोर जी तिवाड़ी	डोम्बिवली वेस्ट	स्व. श्री धुनुदास जी पुरूषोत्तमदास जी तिवाड़ी	आश्विन कृष्ण सप्तमी
16	श्री रामावतार उपाध्याय	मुम्बई	स्व. श्रीमती रूकमणी देवी उपाध्याय पत्नी श्री रामावतार जी उपाध्याय	आश्विन कृष्ण सप्तमी
17	श्रीमती कुसुमलता जाजड़ा	जोधपुर	स्व. श्री मदन लाल जी जाजड़ा	आश्विन कृष्ण अष्टमी
18	श्रीमती राज बाला शर्मा	हिसार	स्व. श्रीमती सोमा देवी शर्मा	आश्विन कृष्णा अष्टमी
19	श्रीमती मीना देवी	ब्यावर	स्व. श्री कन्हैया लाल जी उपाध्याय	आश्विन कृष्णा अष्टमी
20	श्री सागर जी जोशी	परबतसर नागौर	स्व. श्री मूल चन्द जी जोशी	आश्विन कृष्ण नवमी
21	श्री राधेश्याम जी उपाध्याय	डीडवाना नागौर	स्व. श्रीमती पार्वती देवी उपाध्याय	आश्विन कृष्ण नवमी
22	श्री शशि कुमार जी किशन लाल जी जोशी	बड़ौदरा	स्व. श्रीमती सरस्वती बाई पंचोली	आश्विन कृष्ण नवमी
23	श्री गिरधारी जी, बालाप्रसाद जी सिंवाल	सोलापुर	स्व. श्री शिवकरण जी सिंवाल	आश्विन कृष्ण नवमी
24	श्री बद्रीनारायण जी पंचोली	दिल्ली	स्व. श्रीमती लाड देवी पंचोली	आश्विन कृष्ण एकादशी
25	श्री खेमाराम जी जोशी	बाड़मेर	स्व. श्री जेठाराम जी जोशी	आश्विन कृष्ण एकादशी
26	श्री चन्द्र दत्त जी जोशी	अजमेर	स्व. श्रीमती सावित्री देवी स्व. श्री रामेश्वर लाल जी तिवाड़ी (राजोसी)	आश्विन कृष्ण एकादशी
27	श्री जीवन प्रकाश जी त्रिवेदी	हैदराबाद	स्व. मोक्षदा त्रिवेदी	आश्विन कृष्ण एकादशी
28	श्रीमती पुष्पादेवी पंचोली पत्नी श्री ओमप्रकाश जी पंचोली	रतलाम	जन्म दिवस पर	आश्विन कृष्ण द्वादशी
29	श्री कैलाश जी उपाध्याय, भंवरलाल जी उपाध्याय	फोगडी (डीडवाना)	स्व. श्री गणपतलाल जी उपाध्याय	आश्विन कृष्ण त्रयोदशी

30	श्रीमती तारामणि जी सिंवाल	खुनखुना (नागौर)	स्व. श्री भागीरथ जी तिवाड़ी	आश्विन कृष्ण त्रयोदशी
31	श्री बृजेन्द्र कुमार जी शर्मा	अजमेर	स्व. श्री बसन्ती लाल जी शर्मा	आश्विन कृष्ण चतुर्दशी
32	श्री गोविन्द अथर्व जी चौबे	पिंपरी (पुणे)	स्व. श्रीमती सरजू देवी पत्नी रामगोपाल जी चौबे	आश्विन कृष्ण अमावस्या
33	प्रो. डा. हरिप्रसाद जी जोशी	रतलाम	स्व. श्रीमती गंगाबाई	आश्विन कृष्ण अमावस्या
34	श्री घीसू लाल जी तिवाड़ी	अचरापारकम तमिलनाडू	स्व. श्री मोहन लाल जी स्व. श्रीमती मोहिनी देवी	आश्विन कृष्ण अमावस्या
35	श्रीमती कृष्णा शर्मा	शाहपुरा भीलवाडा	पितरों हेतु गुप्तदान	आश्विन कृष्ण अमावस्या
36	श्री सुरेशचन्द्र जी शर्मा	शाहपुरा भीलवाडा	पितरों हेतु गुप्तदान	आश्विन कृष्ण अमावस्या
37	श्रीमती आशा शर्मा	शाहपुरा भीलवाडा	पितरों हेतु गुप्तदान	आश्विन कृष्ण अमावस्या
38	श्री रामकृष्ण जी शर्मा	शाहपुरा भीलवाडा	पितरों हेतु गुप्तदान	आश्विन कृष्ण अमावस्या
39	श्रीमती लीला चाष्टा	चितौड़गढ	पिता जी का एवं अपने पूवजों के निमित्त	आश्विन कृष्ण अमावस्या
40	श्री प्रशांत राधाकिशन जी जोशी	नासिक	स्व. श्री राधाकिशन जी	आश्विन कृष्ण अमावस्या
41	श्री ओमप्रकाश जी पंचौली	रतलाम	सर्वपितर	आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या
42	श्री दीनबन्धु उपाध्याय जी	भीलवाडा	सर्वपितर	आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या
43	श्री दिनेश जी सुगन जी पंचारिया	सोलापुर	स्व. श्रीमती सरोज दिनेश जी पंचारिया	आश्विन शुक्ल प्रतिपदा
44	श्रीमती शैलजा चाष्टा	अजमेर	जन्म दिवस पर	आश्विन शुक्ल प्रतिपदा
45	श्री लक्ष्मीनारायण जी अनिल जी जोशी	नासिक	स्व. श्री रामबिलास जी जोशी	आश्विन शुक्ल द्वितीया
46	श्री सुरेश जी शंकरलाल जी पंचारिया	कराड़-सतारा	स्व. श्री संदीप जी पंचारिया	आश्विन शुक्ल तृतीया
47	श्री रामस्वरूप जी जोशी	किशनगढ़ (अजमेर)	स्व. श्री रामकृष्ण जी जोशी	आश्विन शुक्ल पंचमी
48	श्री ओमप्रकाश जी जोशी	जोधपुर	स्व. श्रीमती गंगादेवी मोहन जी जोशी	आश्विन शुक्ल पंचमी
49	श्रीमती शोभा शर्मा पत्नी श्री मदन लाल जी	अजमेर	स्व. श्रीमती सरस्वती देवी पत्नी किस्तूर चन्द जी शर्मा (जोशी)	आश्विन शुक्ल अष्टमी

श्री पुष्कर गौतमाश्रम की प्रबन्ध कारिणी समिति बैठक दिनांक 31.8.25 का कार्यवृत्त

आज दिनांक 31.08.2025 (रविवार) को श्री पुष्कर गौतमाश्रम ट्रस्ट समिति पुष्कर की प्रबन्धकारिणी समिति की बैठक श्री हनुमान प्रसाद शर्मा वरि. उपाध्यक्ष ट्रस्ट समिति की अध्यक्षता में प्रात: 10.30 बजे से श्री महर्षि हॉल में आयोजित हुई।

उपरोक्त सभा में पदाधिकारी, प्रबंधकारिणी सदस्य, विशेष आमंत्रित सदस्य एवं समाज बंधु कुल 26 उपस्थित हुए। सर्वप्रथम महामंत्री ने पदाधिकारियों, ट्रस्टी एवं समाज बन्धुओं जिनमें वरि. उपाध्यक्ष श्री हनुमान प्रसाद जी, संरक्षक श्री मोहनराज जी, मंत्री श्री किस्तुर जी गील, मंहामत्री बालकृष्ण शर्मा, अमरचन्द जी उपाध्याय, अनिल जोशी, विष्णु व्यास आदि सभी ने अक्षपाद महर्षि गौतम की पूजा अर्चना की। तत्पश्चात महामंत्री ने वरि. उपाध्याक्ष जी, संरक्षक महोदय और मंत्री महोदय को मंच पर स्थान ग्रहण करने का अनुरोध किया।

महामंत्री ने वरि. उपाध्यक्ष श्री हनुमान प्रसाद जी शर्मा को सभा की अध्यक्षता करने का अनुरोध कर सभा की कार्यवाही प्रारम्भ करने की आज्ञा मांगी। अध्यक्ष जी ने कार्यवाही शुरू करने के लिए महामंत्री को कहा। महामंत्री ने दिनांक 02.08.2025 को प्रेषित एजेण्डे के अनुसार कार्रवाई प्रारम्भ की।

मद संख्या 01 – गत बैठक दिनांक 21.06.2025 की कार्यवाही विवरणी की पुष्टि करना।

महामंत्री ने सदन के सामने गत कार्यवाही का पठन किया जिसकी सर्वसम्मति से पुष्टि की गई।

मद संख्या 02 – गत बैठक के निर्णयों पर क्रियान्वयन रिपोर्ट।

महामंत्री ने क्रियान्वयन रिपोर्ट प्रस्तुत कर बताया कि आश्रम में रसोई के सामने जो गन्दगी रहती थी उसका आवश्यक कार्य करवा लिया है। बर्तन धोने की जगह दीवारें ऊँची करवाई गई। पानी भरता था वहाँ निकास की समुचित व्यवस्था की गई और भी आवश्यक कार्य करवाया गया। कुछ भवन रिपेरिंग का कार्य बकाया है जो बरसात के खत्म होने पर करवाया जायेगा। आश्रम में आवश्यक कैमरे रिपेयर या बदलने का कार्य अभी लम्बित है। कुछ वायर भी खराब हो गया है जो भी बदलवाना है जल्दी ही यह कार्य करा लिया जायेगा। सोलर लगाने का कार्य अभी लम्बित है।

मद संख्या 03 – कार्तिक पूर्णिमा आयोजन के सम्बन्ध में निर्णय लेना।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी कार्तिक पूर्णिमा पर भव्य आयोजन किया जायेगा जिस पर निम्नलिखित समितियाँ बनाई गई जो इस आयोजन को सफल बनाने में अपना योगदान देगी।

आवास समिति

1. श्री वीपी शर्मा
2. श्री अनिल जोशी

काउन्टर सहयोग

1. श्री भंवरलाल जोशी

भोजन समिति

1. श्री रामपाल जी उपाध्याय
2. श्री अशोक त्रिवेदी
3. श्री राजेन्द्र जी शर्मा
4. श्री रमेश जी शर्मा
5. श्री परमेश्वर उपाध्याय

श्री भरत जी शर्मा निवासी लालसोट एक दिन के भोजन सहयोग की राशि प्रदान करेंगे ऐसा श्री मोहनराज जी ने बताया। बाकी सदस्यों द्वारा निम्नानुसार कार्तिक मेला सहयोग राशि की घोषणा की।

1. श्री विजय लूणकरण उपाध्याय	25,000/–
2. श्री जवाहर लाल जी उपाध्याय	11,000/–
3. श्री मोहनराज जी उपाध्याय	11,000/–
4. श्री संजय जी त्रिपाठी	11,000/–
5. श्री विष्णु जी व्यास	11,000/–
6. श्री सावित्री प्रसाद गौतम	5,100/–
7. श्री बालकृष्ण शर्मा	5,100/–
8. श्री हनुमान प्रसाद शर्मा	5,100/–
9. श्री वीपी शर्मा	5,100/–
10. श्री किस्तूर जी गील	5,100/–
11. श्री रमेश जी शर्मा	5,100/–

12. श्री अनिल जी जोशी 5,100/-

13. श्री जितेन्द्र जी जोशी 5,100/-

14. श्री अशोक त्रिवेदी 5,100/-

15. श्री सर्वेश्वर तिवाड़ी 5,100/-

16. श्री भंवरलाल जोशी 5,100/-

17. श्री नवल किशोर जी गोस्वामी 5,100/-

मद संख्या 04-नवनिर्वाचित ट्रस्टीयों को शपथ दिलाना।

अध्यक्ष जी द्वारा निम्नलिखित नर्वनिर्वाचित ट्रस्टियों को शपथ दिलाई गई।

1. श्री परमेश्वर जी उपाध्याय अजमेर (शहर)
2. श्री विष्णु प्रकाश जी व्यास इन्दौर (मध्य भारत)
3. श्री अनमोल उपाध्याय कानपुर (उतर भारत)

मद संख्या 05 - रिक्त ट्रस्टी पद हेतु प्राप्त प्रस्तावों पर विचार कर निर्णय लेना।

श्री वीपी शर्मा जी एवं श्री जवाहर लाल जी उपाध्याय को प्राप्त प्रस्तावों के लिफाफों को खोल प्रस्तावित नामों का ब्यौरा तैयार करने के लिये सर्वसम्मति से अधिकृत किया गया। श्री वीपी शर्मा जी ने प्रस्तावों की गिनती कर सदन के सामने घोषणा की जो निम्न प्रकार है।

ट्रस्टी पद अजमेर (शहर) कुल 12 प्रस्ताव प्राप्त हुए।

1. श्री मनोज शंकर शर्मा 11 प्रस्ताव
2. श्री कुशल उपाध्याय 03 प्रस्ताव

श्री मनोज शंकर शर्मा को अधिक प्रस्तावित करने के कारण साधारण सभा में अनुमोदन के लिये नाम भेजने का सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया।

मद संख्या 06 - अध्यक्ष की अनुमति से अन्य मुद्दों पर विचार करना।

महामंत्री ने साल में एक बार श्रावण मास में भगवान भोलेनाथ की सहस्त्र धारा करवाने का प्रस्ताव रखा। सर्वसम्मति से पारित किया गया कि ट्रस्ट द्वारा सहस्त्र धारा करवाई जाये जिसका खर्च 11,000/- रूपये तय किया गया।

श्री मोहनराज जी ने अपने उदबोधन में बताया कि आज तीन नये ट्रस्टीयों की शपथ दिलाई गई है। हम सभी मिलकर संस्था के लिये तन मन धन से कार्य करते हैं। संस्था को समाज के गरीब तबके के लिए कुछ करना चाहिये जिसमें गरीब महिला, विधवा, परित्यकता को सहायता करना, गरीब छात्रों को छात्रवृत्ति देना या और कोई समाज हित के कार्य करना शामिल हो। इसके लिये एक समिति बना दी जाये जो इस पर कार्य कर अपनी रिपोर्ट अगली मीटिंग में प्रस्तुत करे ताकि इस दिशा में कुछ कार्य किया जा सके।

सदन द्वारा समिति बनाई गई जिसमें निम्न लिखित सदस्य श्री वीपी शर्मा के साथ मिलकर कार्य दिशा, नियम आदि निश्चित करेंगे। समिति को **छात्रवृत्ति एवं आर्थिक सहयोग समिति** का नाम दिया गया। समिति सदस्य निम्न प्रकार होंगे।

1. श्री वीपी शर्मा (संयोजक)
2. श्री बालकृष्ण शर्मा
3. श्री परमेश्वर उपाध्याय
4. श्री संदीप जोशी
5. श्री जितेन्द्र जोशी

श्री मोहनराज जी ने कहा कि गौतमाश्रम समाज की सबसे पुरानी संस्था है 1902 में यह बनी तथा 1976 में इसका संविधान बना। यह संस्था समाज हित में कार्य कर रही है। हम सभी अपना किराया खर्च कर यहाँ आते हैं और निस्वार्थ संस्था के लिए कार्य करते हैं। मैं पिछली दो मीटिंग में नहीं आ सका।

सोलर के लिए मेरी बनवारी जी से बात नहीं हो पाई। जमीन का जहाँ तक सवाल है सरकार से मिल जाये इसके लिये प्रयास करते रहें तथा अगर नहीं मिले तो खरीदने का विचार भी रखें। जमीन के भाव चार गुना हो गये हैं। पहले सभी ट्रस्टियों द्वारा 3 सदस्य बनाने की बात थी। जब तक आप सदस्य नहीं बनायेंगे पैसा आयेगा नहीं और पैसे के बिना जमीन खरीद नहीं सकते।

महामंत्री द्वारा प्रभुलाल जी शास्त्री ट्रस्टी गौतमाश्रम द्वारा भेजे प्रस्ताव सदन के सामने रखे जो निम्न प्रकार हैं :-

1. प्रस्तावित पुस्तकालय का नाम श्री दामोदर शास्त्री गुरू चेरिटेबल ट्रस्ट के नाम रखा जाये।
2. विद्यार्थियों के लिए ट्यूटर की व्यवस्था की जाये।
3. विद्वानों का सम्मान।

उपरोक्त प्रस्तावों मे प्रस्ताव नम्बर दो ट्यूटर रखने की व्यवस्था महामंत्री द्वारा की जाए को सर्वसम्मति से पारित किया गया। बाकी प्रस्तावों पर सदन सहमत नहीं हुआ। पुस्तकालय का नाम महर्षि गौतम के नाम पर ही रखा जाये।

महामंत्री ने कमरा नम्बर 06 की बालकॉनी में वाशरूम बनवाने का प्रस्ताव रखा। श्री मोहनराज जी ने कहा कि इस पर हम सभी विचार करेंगे। श्री हनुमान प्रसाद जी ने कहा कि निर्माण कर अगली बैठक में अनुमोदन करवा लें।

श्री सन्दीप जोशी ने कार्तिक पूर्णिमा आयोजन में शाम को रोज 08 से 10 बजे तक भजन संध्या कार्यक्रम रखने का सुझाव दिया। श्री हनुमान प्रसाद जी ने बताया कि समाज की महिलायें इस दौरान हमेशा मन्दिर प्रांगण में भजन करती हैं।

श्री अनिल जोशी ने सुझाव दिया कि आश्रम में वर्ष में होने वाली गतिविधियों की रिकॉर्डिंग को LED पर आश्रम में दिखाया जाये।

श्री जितेन्द्र जी जोशी ने कहा कि शैक्षणिक परिषद के फ्लैक्स बना कर लगाये जायें। इसके लिये सदन ने जितेन्द्र जी को यह कार्य करने कि लिये अधिकृत किया।

श्री वीपी शर्मा जी ने सदन को बताया कि सामूहिक विवाह सम्मेलन की बकाया राशि जमा नही हुई है। इसके लिये जिम्मेदार व्यक्ति को लिखित में जमा कराने का पत्र दिया जाये। इस पर अध्यक्ष जी ने कहा कि भविष्य में जब तक पैसा जमा नहीं हो बुकिंग नहीं मानी जाये।

महामंत्री ने सभा के अन्त में अध्यक्ष जी से सभा का धन्यवाद ज्ञापित करने का निवेदन किया।

अध्यक्ष जी ने सभी का मीटिंग में पधारकर सकारात्मक चर्चा करने पर आभार व्यक्त किया। हम सभी मिलकर संस्था की उन्नति के लिये कार्य करते रहें। आप सभी बैठक में पधारे उसके लिये आभार धन्यवाद।

अन्त में ट्रस्टीजनों के परिवारजनों के देवलोकगमन पर 2 मिनट का मौन रख श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उनके नाम निम्नानुसार हैं।

1. स्व. श्री श्याम सुन्दर जी पंचारियाँ निवासी बरनैल (नागौर) हा. मु. सोलापुर

श्री सतीश जी पंचारिया ट्रस्टी गौतमाश्रम के काकाजी।

2. स्व. श्री मूलचन्द जी शर्मा निवासी राजोसी हा. मु. जयपुर

श्री चन्द्र दत्त जी जोशी नि. राजोसी हा. मु. अजमेर के भ्राता।

3. स्व. श्रीमती शकुन्तला देवी धर्मपत्नी स्व. श्री ज्ञानचन्द जी नि. राजोसी वरि. उपाध्यक्ष श्री हनुमान प्रसाद जी शर्मा की बड़ी साली जी।
4. स्व. श्री कमल शर्मा निवासी जयपुर मंत्री श्री किस्तूर चन्द जी गील के सुपुत्र।
5. स्व. श्री मणिशंकर जी शर्मा पुत्र स्व श्री वैद्य विजय शंकर शास्त्री (भूतपूर्व कार्यवाहक अध्यक्ष गौतमाश्रम पुष्कर) नि. मालपुरा (टोंक), श्री रविशंकर शर्मा ट्रस्टी गौतमाश्रम पुष्कर के बड़े भ्राता।

❑❑❑

प्रभु-प्राप्ति का मार्ग

द्वितीय सिक्खगुरु अंगददेव जी का पूर्व नाम लहिणा था। तीर्थयात्रा करते समय एक बार उनकी मुलाकात आदिगुरु नानकदेव से हुई और उनके ज्ञान से प्रभावित हो वे उनके होकर रह गये। एक बार नानकदेव ने अपने ज्येष्ठ पुत्र श्रीचन्द से पूछा - 'तुझे किस वस्तु की इच्छा है ?' श्रीचन्द ने उत्तर दिया - 'मुझे ईश्वर भक्ति के अलावा और कुछ नहीं चाहिये।' तब उन्होंने अपने कनिष्ठ पुत्र लक्ष्मीचन्द से भी यही प्रश्न किया। वह बोला - 'मेरी अभिलाषा धन-सम्पत्ति प्राप्त करने की है।' इस पर नानकदेव ने लक्ष्मीचन्द को काफी धन दिया तथा श्रीचन्द को आशीर्वाद दिया - 'जा, तुझे वैराग्य प्राप्त हो।' समीप ही लहिणा भी खड़े हुए थे। नानकदेव ने उनसे भी अपनी अभिलाषा व्यक्त करने को कहा। इस पर लहिणा गद्‌गद् कण्ठ से बोले 'दीनबन्धो! मुझे न तो प्रभु के दर्शन की इच्छा है, न ही धन-वैभव की, बल्कि मुझे गुरु और गुरु-सेवकों की सेवा करने का अवसर मिले, तो मैं अपने आपको धन्य समझूँगा।'

गुरु नानक भाव-विभोर हो लहिणा से बोले - 'पुत्र! जो ईश्वर के बन्दों की सेवा करना चाहता है, प्रभु उसी को प्राप्त होते हैं। सेवा-धर्म को समझने के कारण गुरु-गद्दी का सच्चा अधिकारी तो तू ही है।' ❑❑❑

महामंत्री की कलम से......

10 जनवरी 2023 को मैंने समाज की इस बेहतरीन समिति का कार्यभार महामंत्री के पद पर ग्रहण किया। 15 जनवरी 2026 दौड़ी हुई आ रही है, पुनः नई प्रबन्धकारिणी बनेगी।

सम्पादक महोदय के आग्रह पर मैं कुछ शब्द आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरे जो भी खट्टे-मीठे अनुभव रहे वो आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। महामंत्री बनना मेरे लिये ठीक वैसा ही था जैसा एक किसी व्यक्ति को हवाई जहाज उड़ाना नही आये और उसको पायलट की सीट पर बैठा दिया जाय। आप समझ सकते हैं कि उस जहाज का क्या हाल होता है। जब पहली प्रबन्धकारिणी की मीटिंग हुई और उसकी कार्यवाही मैंने लिखी। बिल्कुल कम शब्दों में। तो उस पर श्री मोहनराज जी की एवं श्री वी.पी. शर्मा की प्रतिक्रिया आई कि इसे थोड़ा और विस्तार से लिखा जाना चाहिये। धीरे-धीरे मैंने इसमें सुधार किया, फिर भी मैं, उतनी अच्छी नहीं लिख पाया। बाद में मैंने श्री अशोक त्रिवेदी जी का भी इसमें सहयोग लिया और कुछ हद तक इसमें सफलता प्राप्त की।

संस्था के विधान में सभी कार्यो की जवाबदेही महामंत्री के हिस्से में ही तय की है। शुरु-शुरु में मुझे अजीब लगता था। मैं क्रिया की प्रतिक्रिया भी जल्दी ही देता था।

कुम्हार जैसे घड़े को बनाता है उसी प्रकार संस्था के पुरोधाओं ने मुझे बनाया। कोई भी संस्था हो उसमें सभी प्रकार के विचारों के लोग होते हैं। सभी के साथ हिल-मिल कर नदी नाव संयोग जैसे चलना आवश्यक है।

मेरा जैसा आंकलन रहा कि प्रबन्धकारिणी में जो निर्णय हों और अगली मीटिंग तक सारे बिन्दुओं पर कार्य सम्पन्न हो जाये, मेरे ख्याल से संस्था की उन्नति का यही परिचायक है। मेरी पूरी कोशिश रहती कि सभी कार्य सभी की सहमति से पूर्ण किये जायें, इसमें मुझे सफलता भी मिली किन्तु कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु छूट भी गये जिन पर कार्य नहीं हो पाया।

जैसा कि होता है मेरी पिछली पीढ़ी और मेरे में 15 वर्ष का लगभग अन्तर था तो विचारों में थोड़ा विरोधाभास होना स्वाभाविक ही था। मैं कागजी कार्य कम और आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल लेकर इसे सरल बनाना चाहता था जिसमें कुछ सफल भी रहा।

इस कार्यकाल के अन्तर्गत मुझे एक बात समझ में आ गई थी कि बड़ों के मार्गदर्शन से कार्य अच्छा होता है।

अध्यक्ष जी श्री सीताराम जी जोशी, संरक्षक महोदय श्री मोहनराज जी उपाध्याय, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री हनुमान प्रसाद जी शर्मा, उपमंत्री श्री अशोक जी त्रिवेदी आदि सभी पदाधिकारियों एवं समस्त प्रबन्धकारिणी समिति का पूर्ण सहयोग रहा।

मेरे संकट मोचन और गुरु श्री वी.पी. शर्मा साहब का मैं विशेष आभारी हूँ। आपका मुझे सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शन रहा। आप इस संस्था के कानूनी सलाहकार हैं और रहेंगे। आपके रहते संस्था का बाल भी बाका नहीं हो सकता। आप सभी का आभार, धन्यवाद।

जय महर्षि गौतम

– बालकृष्ण शर्मा, महामंत्री

*''**विपदा में एकमात्र सहारा – परम सत्ता की पुकार**'' – प्रायः मनुष्य समस्याओं के बीच बुरी तरह फंस जाता है। समस्त परिस्थितियां उसके प्रतिकूल हो जाती हैं। सहयोग के सभी पथ बंद लगते हैं। सगे संबंधियों और इष्ट मित्रों से सहयोग की भी आस नहीं दिखाई देती है उस समय में मनुष्य को सिर्फ़ एक ही सहारा, एक ही संबल दिखाई देता है, जो सर्वशक्तिमान है।*

वेद मंत्र

आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतः

(ऋ. १ / ८१/ १)

मनुष्य काम करना चाह कर भी यह न जाने कि काम कैसे करना चाहिए तो निश्चय ही उसके काम कल्याणकारी फल नहीं दे सकते। वेदमाता का कहना है कि मनुष्य सदा भद्र काम करे। भद्र कामों का परिणाम भी भद्र होगा। जिससे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में भद्रता का संस्थापन होगा। भद्र से विकसित 'भला' शब्द हिन्दी में अच्छे के अर्थ में प्रयुक्त होता है। अच्छे काम का अच्छा फल होता है- यह विश्वास ही व्यक्ति और समाज को अच्छे काम में लगाता है और सच्चाई से भर देता है। भद्र या अच्छा कार्य मङ्गलकारी, यज्ञिय और सुखकर होता है। इसके विपरीत अनिष्टकारी और दुःखप्रद व्यवहार अभद्र कार्य है।

वेदमाता प्रेरणा देती है- हमारा दिन भद्र हो अर्थात् दोपहर भद्र हो, हमारे लिए सायं भद्र हो, प्रातःकाल धन्य हो एवं रात्रि कल्याणकारी हो। इसके लिए आवश्यक है हमारा मन भद्र, हृदय सुसंस्कृत और कर्म भद्र हों। हमारे कर्म भद्र कैसे हों? अनुत्तेजना, स्थिरता, शान्ति एवं प्रसन्नतायुक्त मन द्वारा। उत्तेजना, अस्थिरता, अशांति का अर्थ है, अभद्रता को बढ़ावा देना। हिंसा और अहंकार से अभद्रता की व्याप्ति होती है। इसके विपरीत अहिंसा और विनम्रता भद्र व्यवहार का लक्षण है। मानव समाज भद्र कर्म करे तो परिणाम भला मिलेगा। इसके लिए प्रत्येक मानव यह सोच ले कि हमें तो हर परिस्थिति में भद्र कर्म ही करने हैं, अभद्र कर्म किसी भी अवस्था में नहीं करने। यदि हमसे कोई अभद्र व्यवहार भी करना चाहता है तो भी हमें भद्रता का ही परिचय देना है। हमें यह नीति अपनानी है- क्रोध को अक्रोध से, दुष्टता को सज्जनता से शान्त करना है, क्योंकि सज्जन के प्रति सज्जनता का व्यवहार हर कोई कर सकता है, लेकिन दुष्ट के प्रति सज्जनता का व्यवहार करने वाला ही सही अर्थों में मानव है, आर्य है। शठ के प्रति शठता, दुर्जन के प्रति दुर्जनता दर्शाना अभद्र, अनार्य और अमानवीय नीति है। शक्ति के साथ मानवता का परिचय देना आर्यत्व है; परन्तु साथ ही आक्रमणकारी का सम्पूर्ण शक्ति व नीति के साथ मुकाबला भी भद्रता है।

हम सब, पूरा मानव-समाज सर्वजनों के प्रति (छोटे, बड़े सबके प्रति) प्रतिदिन हर समय पर भद्र व्यवहार करें। हम अविलासी हों, मानव-मानव से प्यार करें, मानव-जीवन का मूल्याङ्कन करें, पाप, कुशिक्षा, अभद्रता से दूर रहें तो हमारा मानव-समाज भद्र होगा, परोपकार की भावना व्याप्त होगी और मानव-समाज की उन्नति होगी। यह ऋग्वेद का प्रसिद्ध मंत्र है जो ज्ञान को हर तरफ से स्वीकारने की सोच को दर्शाता है। इसका अंग्रेजी अनुवाद है - "Let noble thoughts come to us from every side" यह मंत्र इस विचार को व्यक्त करता है कि हमें सभी श्रोतों से ज्ञान और बुद्धि को ग्रहण करने के लिए अपना मन खुला रखना चाहिए। यह मंत्र सभी दिशाओं से अच्छे और सकारात्मक विचारों के प्रवाह को आमंत्रित करता है। हम इस वेदमाता के शब्दों में कामना करते हैं-

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

(ऋ. १. ८९. ८)

अर्थात् हे श्रेष्ठ पुरुष! हम कानों से मङ्गलप्रद वाक्य सुनें। यज्ञकामी देवों! हम आंखों से कल्याणकारी वस्तु हो देखें। हम दृढाङ्ग शरीरधारी होकर स्तुति करते हुए पूर्णायु प्राप्त करें।

एक-एक व्यक्ति में ऐसी भद्रता जागे तो एक दिन सारा मानव समुदाय भद्रता से आपूरित, भद्रता का केन्द्र बन जाएगा।

- श्रुति मंगला से साभार

कर्मफलों का त्याग

कर्मफलों का त्याग – भगवान श्रीकृष्ण के श्री चरणों में स्वयं का समर्पण है। जिसने कर्मफलों का त्याग कर दिया है, उसके लिए कोई 'कर्मयोग' नहीं है। उसके लिए सिर्फ 'ज्ञान' और 'भक्ति' है, क्योंकि वह केवल एक निमित्त मात्र साक्षी है। कोई कर्मफल उस पर लागू नहीं होता, क्योंकि उसके कर्मों के कर्ता और भोक्ता तो भगवान श्रीकृष्ण स्वयं बन जाते हैं।

समस्त कामनाओं के नाश से अमृतत्व की प्राप्ति होती है। जो कूटस्थ अक्षर ब्रह्म की उपासना करने वाले अभेददर्शी हैं, उनके लिये कर्मयोग सम्भव नहीं है। भगवान कहते हैं –

'श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानंविशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाचछान्तिरनन्तरम्'

(गीता – 12:12)

अर्थात् अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है; ज्ञान से श्रेष्ठ ध्यान है और ध्यान से भी श्रेष्ठ कर्मफल त्याग है; त्याग से तत्काल ही शान्ति मिलती है। यदि तुम अभ्यास नहीं कर सकते, तो ज्ञान के अनुशीलन में लग जाओ। लेकिन ज्ञान से श्रेष्ठ ध्यान है और ध्यान से भी श्रेष्ठ है कर्म फलों का परित्याग क्योंकि ऐसे त्याग से मनुष्य को मन:शान्ति प्राप्त हो सकती है।

ऐसे भक्तों का उद्धार अति शीघ्र भगवान स्वयं कर देते हैं। भगवान कहते हैं –

'तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्॥'

(गीता – 12:7)

अर्थात् हे पार्थ ! जिनका चित्त मुझमें ही स्थिर हुआ है ऐसे भक्तों का मैं शीघ्र ही मृत्युरूप संसार सागर से उद्धार करने वाला होता हूँ। जो अपने सारे कार्यों को मुझमें अर्पित करके तथा अविचलित भाव से मेरी भक्ति करते हुए मेरी पूजा करते हैं और अपने चित्तों को मुझ पर स्थिर करके निरन्तर मेरा ध्यान करते हैं, उनके लिये मैं जन्म-मृत्यु के सागर से शीघ्र उद्धार करने वाला हूँ।

ईश्वर भाव और सेवक भाव परस्पर विरुद्ध है। इस कारण प्रमाण द्वारा आत्मा को साक्षात् ईश्वर रूप जान लेने के पश्चात् कोई किसी का सेवक नहीं है।

भगवान कहते हैं –

'अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी॥'

(गीता – 12:13)

'सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥'

(गीता –12:14)

अर्थात् भूतमात्र के प्रति जो द्वेषरहित है तथा सबका मित्र तथा करुणावान् है; जो ममता और अहंकार से रहित, सुख और दुःख में सम और क्षमावान् है॥

जो संयतात्मा, दृढ़निश्चयी योगी सदा सन्तुष्ट है, जो अपने मन और बुद्धि को मुझमें अर्पण किये हुए है, जो ऐसा मेरा भक्त है, वह मुझे प्रिय है॥

हम सदा संतुष्ट और समभाव में रहें। अपना संकल्प-विकल्पात्मक मन और निश्चयात्मिका बुद्धि – भगवान को समर्पित कर दें। भगवान को कभी न भूलें। मन और बुद्धि – – जब भगवान को समर्पित है, समभाव में स्थिति है और पूर्ण संतुष्टि है, – तब हम भगवान को उपलब्ध हैं। ■■■

महाशंकर

'वृक्षों को शंकर क्यों कहते हैं ?' एक पुत्र ने पिता से पूछा। पिता ने वृक्ष में जल डालते हुए कहा – 'बेटा! समुन्द्रमन्थन हुआ, तब देव और दनुजों में सब कुछ बाँट लिया, पर विष लेने को कोई तैयार न हुआ। तब उसे शंकर जी ने पीकर मानवता की रक्षा की।

शंकर जी ने तो ऐसा एक बार किया, पर मनुष्य गन्दी साँस, धुआँ और सड़ाँन उत्पन्न किया करते हैं, उन्हें जीवन भर ये वृक्ष ही तो पान करके वायु शुद्ध रखते हैं। बोलो, वह क्या हुआ ?' – 'महाशंकर।' पुत्र ने उत्तर दिया।

अध्यक्षीय आलेख

विश्व पटल पर हिंदी के बढ़ते कदम

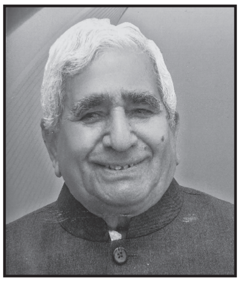

हिंदी भारत की पहचान है,
सिर्फ भाषा ही नहीं, स्वाभिमान है।

भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राज भाषा घोषित करने करने वाली धारा स्वीकृत की थी। तब से प्रति वर्ष 14 सितंबर को देश-विदेश में हिंदी-दिवस मनाया जाता है। हिंदी राजभाषा होने के साथ-साथ विशाल जन समुदाय द्वारा बोली, समझी जाने के कारण हिंदी को हमारे देश की राष्ट्रभाषा होने का गौरव प्राप्त है। राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति अपना प्रेम व सम्मान प्रकट करना हमारा कर्तव्य है। इसलिए हिंदी दिवस के अतिरिक्त हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न कार्यक्रम संपादित किये जाते हैं। राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य हिंदी ही कर सकती है। इसलिए हिंदी सप्ताह, पखवाड़ा, लेखन कार्य व काव्य, निबंध, नाटक आदि अनेक प्रकार के कार्यक्रम संपादित किये जाते हैं।

प्रत्येक देश का राष्ट्रगीत, राष्ट्रध्वज एवं राष्ट्रभाषा उस देश के मान बिन्दु होते हैं। अतः राष्ट्रगीत व राष्ट्रध्वज के समान ही राष्ट्रभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि के संरक्षण, प्रचार-प्रसार हेतु किये जाने वाले यह समस्त कार्य राष्ट्रभाषा के प्रति हमारे विशिष्ट प्रेम को दर्शाते हैं। हिंदी इसलिए बड़ी नहीं है कि हिंदी बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक है परंतु हिंदी इसलिए महत्वपूर्ण भाषा मानी जाती है क्योंकि भारत की करोड़-करोड़ जनता के हृदय व मस्तिष्क की भूख मिटाने का एक जबरदस्त माध्यम है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, साक्षर से निरक्षर तक प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति हिंदी भाषा आसानी से बोल समझ सकता है। इसलिए हिंदी राजभाषा, राष्ट्रभाषा और जन भाषा कहलाती है। अंग्रेजी अंतर्राष्ट्रीय भाषा अर्थात् परायी भाषा होने पर भी इसे सह भाषा का अधिकार मिला है परंतु राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास व प्रचार-प्रसार हेतु हमें इसका सतत् प्रयोग करना चाहिए। कोई भी भाषा तब समृद्ध मानी जाती है जब उसका साहित्य भी समृद्ध हो। आदिकाल से अब तक हिंदी के आचार्यो, संतो, कवियों, लेखकों, विद्वानों एवं हिंदी प्रेमियों ने अपने उत्कृष्ट ग्रंथो विशिष्ट रचनाओं से हिंदी को अधिक समृद्ध बनाने का सराहनीय कार्य किया है। आधुनिक परिवेश में अंग्रेजी को भी सीखना आवश्यक है। किसी भी अंतर्राष्ट्रीय भाषा को पढ़ना सीखना गलत नहीं है। इसलिए अंग्रेजी सहित अन्य भाषाओं का ज्ञान भी प्राप्त करें पर अपनी राष्ट्रभाषा के महत्व को बनाए रखते हुए इसका विकास निरंतर करते रहना हमारा कर्तव्य है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु 10 से 14 जनवरी 1975 को नागपुर में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें मॉरीशस, सूरीनाम, लंदन, त्रिनिडाड व टोबेगो, न्यूयॉर्क एवं भारत ने 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाने का संकल्प लिया। हमारे लिए यह भी गर्व की बात है कि विभिन्न विकसित और संपन्न देशों के विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत हमारी संस्कृति को करीब से जानने समझने के लिए भारत में आकर हिंदी सीख रहे है।

इस संबंध में यह कहा गया है -

हिंदी बने विश्व की भाषा,
जन जन की है यह अभिलाषा।
नव सूर्य की नव किरण यह
दिनों दिन अग्रसर राष्ट्रभाषा।

हिंदी के महत्व को प्रतिपादित करते हुए यह कहा गया है -

निज रूप विशाल दिखाती हमें,
वह भारत माता की तस्वीर है 'हिन्दी'।
तुलसी, रसखान, रहीम पिये,
वह धेनु का क्षीर है हिंदी।
पेड़ की धूप में चाँद मिले,
वह शीतल मंद समीर है हिंदी।
मीरा का पावन गीत,
वही खुसरो की पहेली कबीर है हिंदी।
हिंदी से ही जयहिंद है,
हिंदी से ही हिंदुस्तान है।

हिंदी ने विषमताओं के इस देश में सभी भाषा भाषियों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है। यह हमारे लिए गौरव का विषय है कि जिस भाषा ने राष्ट्र को जोड़ा, वही हिंदी आज हमें विश्व से जोड़ रही है। विगत् वर्षों में भले ही हिंदी के प्रचार प्रसार में उतार चढ़ाव आये परन्तु आज उसके विकास को रोक पाना असंभव है। राष्ट्र से आगे बढ़कर यह आज विश्व, उसकी संस्कृति एवं बाज़ार में विस्तार पा रही है। अत: वैश्विकरण के इस दौर में हिंदी का भविष्य निश्चय ही उज्जवल है। अत: हिंदी दिवस के पुनीत पावन शुभावसर पर हम सभी हिंदी प्रेमियों का अभिवादन करते हैं कि वे उत्साहपूर्वक हिंदी दिवस मनावे व गौरव का अनुभव करें।

संयुक्त राष्ट्र संघ में पाली सांसद श्री पी.पी. चौधरी का हिंदी भाषण

संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्यालय में पाली के सांसद व एक राष्ट्र एक चुनाव पर संयुक्त संसदीय समिति अध्यक्ष श्री पी.पी. चौधरी ने हिन्दी भाषा में अपने अमूल्य विचार व्यक्त कर विश्व स्तर पर हिन्दी के महत्व को प्रदर्शित किया। वहाँ भारत के स्थायी मिशन की ओर से हिन्दी दिवस के वार्षिक समारोह पर कहा गया कि हिन्दी एक भाषा नहीं यह भारत की भावना, पहचान और एकता का प्रतीक है। यह एक सूत्र है जो उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक पूरे देश को जोड़ता है। विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी का महत्वपूर्ण स्थान है। यह भाषा लगभग छ: सौ मिलियन लोग बोलते है। उन्होंने कहा कि मॉरीशस, नेपाल, श्रीलंका, सुरिनाम, फिजी, गुआना जैसे कई देशों में हिंदी सिखाई जा रही है। वहाँ हिन्दी भाषा का उपयोग किया जा रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका में हिंदी भाषा बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक हैं। विश्वविद्यालयों में वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती है। इंग्लैंड के ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों में हिन्दी लोकप्रिय है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा में 10 जून 2025 को बहुभाषावाद पर भारत की ओर से सह-प्रायोजित प्रस्ताव अपनाया गया। इस प्रस्ताव में पहली बार हिन्दी भाषा का उल्लेख है। श्री पी.पी. चौधरी ने कहा कि हिंदी केवल शब्दों का समूह नहीं है, वह हृदय की भावना है। हिन्दी भारत की आत्मा है और यह आत्मा अब सीमाओं के परे पूरी दुनिया में अपनी मधुरता फैला रही है। संयुक्त राष्ट्र संघ में श्री चौधरी द्वारा राष्ट्रभाषा हिंदी में भाषण देने पर हम सभी गौरवान्वित हैं। उनके कथन का यह अभिप्राय है -

अपनी हिंदी विश्व पटल पर,
आशा, विश्वास जगाती है।
अम्बर में दीप जलाती है,
सागर में सीप बहाती है।

जय हिन्द जय नागरी।

सीताराम जोशी
अध्यक्ष, श्री पुष्कर गौतमाश्रम, पुष्कर

अपने बुरे कर्मों का फल यथासमय भोगना ही पड़ेगा

महाभारत पर आधारित एक अनुश्रुति है कि राजा धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों के युद्ध में मर जाने के बाद उन्होंने भगवान् श्रीकृष्ण से पूछा कि जीवन में मैंने कोई ऐसा भयंकर पाप नहीं किया, जिसके फलस्वरूप मेरे सौ पुत्र एक साथ मर गये। भगवान् श्रीकृष्ण ने उन्हें उनके पिछले जन्मों को देखने के लिए दिव्य दृष्टि प्रदान की। तब राजा को मालूम हुआ कि पचास जन्म पूर्व वे एक बहेलिया थे और उन्होंने वृक्ष पर बैठे हुए पक्षियों को पकड़ने के लिये जलता हुआ जाल फेंका था, जिससे सौ पक्षी जलकर मर गये थे। कुछ अन्धे हो गये थे। पचास जन्मों तक संचित पुण्यकर्मो के कारण उन्हें अपने इस पाप कर्म का दण्ड नहीं भोगना पड़ा और जब पुण्य कर्मो का प्रभाव क्षीण हो गया तो यह फल भोगना पड़ा। इस कथा का सारांश यही है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने बुरे कर्मों का फल यथासमय भोगना ही पड़ेगा। राजा धृतराष्ट्र को भी अपने पाप कर्म का दण्ड (दृष्टिहीन होकर अपने सौ पुत्रों की मृत्यु) भोगना पड़ा।

अतएव यह स्पष्ट है कि मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल पाता है।

पीढ़ियों का बदलाव

माना कि पीढ़ी दर पीढ़ी एक बदलाव एवं दूरियां सम्भव हैं। लेकिन वर्तमान में जिस तेजी से यह बदलाव आता जा रहा है, वह अत्यंत भयंकर है। विश्व में इन साठ सत्तर दशकों में विचारों, भावनाओं, संस्कारों में रहन-सहन ही नहीं वैज्ञानिक एवं तकनीकी उन्नति में जिस तीव्रगति से बदलाव आया है वो सोचने पर मजबूर कर रहा है कि इसका अन्तिम छोर क्या रहेगा।

हमारी पीढ़ी से पूर्व या यों कह लें हमारे बचपन या यौवन काल तक जो संस्कारों में शालीनता, विचारों में निश्छलता, आत्मीयता, रहन-सहन में सादगी थी वो प्राय: अब लुप्त सी हो गई है। भौतिक सुख साधन की जो वैभवता वर्तमान में है वो हमारे समय में कहाँ थी। भोर में जल्दी उठना नियमित दिनचर्या के साथ कठिन परिश्रम करना, पैदल मीलों चलकर एक स्थान से दूसरे स्थान जाना यहाँ तक कि विद्या उपार्जन के लिये भी एक गाँव से दूसरे गाँव को पैदल दौड़ते हुए जाना। अनुशासन युक्त जीवन के साथ अपने गुरुजनों को आदर सम्मान देना। गुरु एवं माता पिता को ईश्वर के समान प्रेरणा स्रोत मानकर उनकी पूजा करना। यह सब वर्तमान में जैसे लुप्त सा होता जा रहा है। उस समय में शायद जीवन शैली स्थिर तथा नियमित थी। श्रम ही शायद उसकी पूंजी थी, इसीलिये जीवन स्वस्थ एवं अपेक्षाओं से सन्तुष्ट था। सादगी से जीने में सन्तोष की प्राप्ति थी। सामाजिक समरसता तथा संयुक्त परिवार में जीने की सद्प्रेरणा मिलती थी। प्रकृति के प्रति असीम प्रेम और आत्मीय भाव से उसे संरक्षण प्रदान करना जीवन को उल्लास से भर देता था। लेकिन अब इन दशकों बाद वर्तमान में सब कुछ बदल सा गया है। विचारों एवं भावनाओं में उच्छृंखलता की स्वतन्त्रता व्याप्त है। अब मानव प्रकृति से दूर होता जा रहा है, अपनी संस्कृति एवं संस्कार भूलता जा रहा है। वर्तमान में जैसे हम अपनी पीढ़ी को संस्कारहीन बनाते जा रहे हैं। शायद इसमें भागीदार हमारी यह पुरानी पीढ़ी भी जिम्मेदार है। क्योंकि भौतिकवाद एवं वैश्विक सम्पन्नता की होड़ में हम इतने अन्धानुकरण हो गये हैं कि वर्तमान पीढ़ी को अपनी संस्कृति एवं संस्कार प्रदान करने का समय ही नहीं निकाल पा रहे हैं। विज्ञान एवं वैज्ञानिक तकनीक ने इतनी उन्नति कर ली है, इतने संसाधन जुटा लिए हैं कि जैसे श्रम को हमसे इस भौतिकवाद ने छीन लिया हो। मानव प्रकृति के साथ इतना खिलवाड़ एवं इसका दोहन करता जा रहा है कि वैश्विक होड़ में उसे दूसरा ईश्वर होने का अहंकार होता जा रहा है। वो आत्मिक भावनाएँ, प्रेम, भाईचारा, सम्मान का अहंकार होता जा रहा है। हम एक-दूसरे को समाप्त करने की जिद में अपने आप को भी विनाश की ओर ले जाने में प्रयत्नशील हैं। दैनिक दिनचर्या में परिवर्तन के साथ विश्व को अपना कुटुम्ब मानने वाले हम अपने संयुक्त परिवार से भी दूर होकर एकाकी परिवार और पाश्चात्य जीवनशैली के अधीन हो चुके हैं। शायद यही कारण है कि हम अपनी पीढ़ी को सदाचार नैतिक आचरण जैसे संस्कारों से दूर करने के साथ-साथ हमारी सांस्कृतिक धरोहर से भी विहीन होते जा रहे हैं। आत्मीय स्नेह से दूर हम ऐसी आपदाओं को न्योता देते जा रहे हैं। वैश्विक होड़ से दूर रहकर पुन: हमें महामारियों एवं आपदाओं से भविष्य में पुनरावृत्तियों को रोकने के लिए आपसी सदाचार स्नेह एवं प्रकृति के प्रति अपने प्रेम को उजागर करना होगा, उसका संरक्षण करना होगा।

- हनुमान प्रसाद शर्मा,
वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री पुष्कर गौतमाश्रम

प्राणायाम द्वारा आयु की वृद्धि

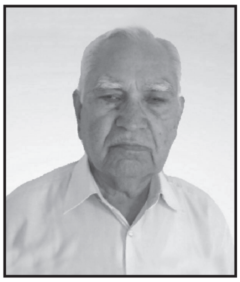

जिस प्रकार मनुष्य के जीवन में सुख-दु:ख, हर्ष-विषाद तथा रोग कष्ट आदि भोग, कर्मों के अनुसार ईश्वर द्वारा निश्चित किये होते हैं उसी प्रकार मनुष्य की आयु भी कर्मों के अनुसार ईश्वर द्वारा निश्चित होती है तथा इस निश्चित आयु से एक भी क्षण कम या अधिक प्राप्त करना सम्भव नहीं है । महर्षि पतंजलि ने ''योगदर्शन'' में स्वयं लिखा है –

''**सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगा**'' अर्थात अपने कर्मों का विपाक (फल) जीव को मनुष्य, पशु, पक्षी आदि जाति, आयु तथा सुख-दु:ख आदि के रूप में मिला करता है । यदि उपरोक्त कथन को सही मान लिया जाए तो प्रश्न पैदा होता है कि जब मनुष्य की आयु कर्मों के अनुसार ईश्वर द्वारा निश्चित की हुई है तो फिर प्राणायाम के द्वारा आयु में वृद्धि किस प्रकार हो सकती है । इसका संक्षेप में उत्तर यह है कि ईश्वर द्वारा निश्चित आयु वर्षों, महीनों व दिनों में नहीं होती है बल्कि यह निश्चित आयु प्राणों (श्वास) की संख्या में होती है । कहावत भी है कि गिनती में जितने श्वास भाग्य में लिखे हैं उनसे एक भी कम या अधिक ले पाना मनुष्य के हाथ में नहीं है । अब इन प्राणों को जो हमें अपने कर्मों के फल स्वरूप एक निश्चित संख्या में प्राप्त हुए हैं चाहें तो हम उन्हें शीघ्र समाप्त कर दें चाहे देर से । उदाहरण के तौर पर एक व्यक्ति के पास सौ रुपये हैं जिन्हें यदि वह फिजूल खर्ची में उड़ा दे तो कुछ ही समय में उन्हें वह समाप्त कर देगा, किन्तु उन्हीं सौ रुपयों को वह संयम से आवश्यकता अनुसार खर्च करे तो वही सौ रुपये लम्बी अवधि तक चलेंगे। इसी प्रकार निश्चित संख्या में प्राप्त प्राणों को यदि हम शीघ्र समाप्त कर देंगे तो हमारी आयु कम हो जाएगी और यदि हम देर से समाप्त करेंगे तो आयु बढ़ जाएगी । यदि हम मनुष्य के अलावा अन्य प्राणियों की आयु तथा श्वास गति को देखें तो इस तथ्य को आसानी से समझ सकेंगे । कछुआ सबसे कम अर्थात एक मिनट में पाँच श्वास लेता है अत: उसकी आयु सब प्राणियों से अधिक लगभग एक सौ पचास वर्ष से अधिक होती है । दूसरी ओर खरगोश सबसे अधिक एक मिनट में अड़तीस-चालीस श्वास लेता है इसलिये उसकी आयु लगभग आठ वर्ष की होती है ।

स्वस्थ तथा सदाचारी मनुष्य के प्राण (श्वास) बहुत धीरे धीरे और शान्तिपूर्वक चला करते हैं, जबकि निर्बल, रोगी और दुराचारी मनुष्य के प्राण बहुत जल्दी जल्दी चलते हैं । यही कारण है कि स्वस्थ तथा सदाचारी मनुष्य दीर्घायु होते हैं और निर्बल, रोगी व आचारहीन व्यक्ति अल्पायु में प्रस्थान कर जाते हैं । यह सर्व विदित है कि प्राणायाम के द्वारा मनुष्य स्वस्थ व सदाचारी बनता है । इसलिये यदि हम प्राणायाम के द्वारा अपने शरीर को स्वस्थ व बलवान बनाकर सदाचारी जीवन जियेंगे तो निश्चय ही हम दीर्घायु बनेंगे । अथर्ववेद में कहा है – **प्राणापानौ मृत्योर्मां पातम्** अर्थात हे प्राण और अपान शक्तियों, तुम मेरी मृत्यु से रक्षा करो । प्राणायाम के फलस्वरूप जितने समय में सामान्य अवस्था में हम दस श्वास लेते हैं उतने ही समय में कुम्भक प्राणायाम करके केवल एक श्वास लेते हैं । इस अवस्था में नौ श्वास हमारे प्राण-कोष में सुरक्षित रह जाते हैं जो कि हमारी दीर्घायु का कारण बनते हैं । योगियों की दीर्घायु का यही रहस्य है । योग ग्रन्थों में लिखा है –

यावद् वायु: स्थिरो देहे तावज्जीवनमुच्यते ।
मरणं तस्य निष्क्रान्तिस्ततो वायुं निरोधयेत ।।

अर्थात् जब तक शरीर में प्राण स्थिर हैं तब तक ही जीवन है और प्राणों के निकल जाने का नाम ही मृत्यु है, अत: दीर्घायु प्राप्त करने के लिये प्राणायाम द्वारा अपने अन्दर प्राणशक्ति को अवश्य रोकना चाहिए । चरक संहिता में भी लिखा है कि प्राणों को सुरक्षित रखने अर्थात रोकने से मनुष्य दीर्घायु को प्राप्त करता है ।

शेष पृष्ठ 29 पर......

नैमिषारण्य धाम

श्री हरिः

(चार धाम की यात्रा अधूरी है बिना नैमिषारण्य धाम)

सनातन धर्म में प्रत्येक मनुष्य की इच्छा होती है कि वह एक बार चार धाम की यात्रा करे। यही कारण है कि प्रत्येक वर्ष बड़ी संख्या में लोग चार धाम की यात्रा पर निकलते हैं। चार धाम यात्रा करने पर पुण्य की प्राप्ति होती है। हालांकि उत्तर प्रदेश में एक ऐसा तीर्थस्थल है, जहाँ दर्शन नहीं करने पर चार धाम की यात्रा अधूरी मानी जाती है।

भगवत्कृपा से विगत 5 जून से 11 जून 2025 ई. तक 'श्रीमद्भागवत कथा' श्रवण के साथ इस तीर्थ में सप्त दिवसीय निवास का सौभाग्य मिला। यहां के दर्शनीय स्थानों के दर्शन कर आनंदानुभूति हुई। पाठकों के सुविधार्थ नैमिषारण्य के दर्शनीय स्थलों की जानकारी दी जा रही है ताकि भावी दर्शनार्थियों को मार्गदर्शन मिल सके।

उल्लेखनीय है कि श्रीमद्भागवत का प्रारंभ एवं श्री सत्यनारायण की कथा पहली बार यहीं पर हुई थी।

भारतवर्ष में तीन अरण्य हैं-नैमिषारण्य, वृन्दारण्य, दण्डकारण्य।

नैमिषारण्य का अर्थ-निमिषः विष्णुः तस्य इदं नैमिषम्ः। भगवान विष्णु के क्षेत्र का नाम 'नैमिषारण्य' है। द्वितीय भाव नेमिः शीर्यते यस्मिन्, जहां विष्णु का चक्र क्षीण हो गया। नेमिष में मत्वर्थीय सकार को षकार होकर नैमिष बना है।

'नैमिषारण्य' का दार्शनिक भाव

'प्रशांत अन्तःकरण' का नाम नैमिषारण्य है। सूत का अर्थ सारयति अश्वान इन्द्रियाणि वा। सूत अर्थ में भगवान वासुदेव साक्षी हैं। शौनकादि ऋषि ही अधिकारी शान्त वृत्तियां हैं। महाभारत में इन्द्ररूपी घोडों को चलाने वाले 'श्रीकृष्ण सारथी' हैं। इस स्थान पर चक्र की नेमी जीर्ण शीर्ण हो गई थी, इसलिए यह नैमिषारण्य बन गया। जहां वृक्षों में सात्विक गुणों का उद्बेक हुआ करता है वहां सारा वायुमंडल अलौकिक शांति की ओर उत्प्रेरित होता है। ऐसे में नैमिष के परम पावन क्षेत्र में पूज्य स्वामीश्री वेंकटेशाचार्यजी महाराज ने गोमती नदी के तट पर भागवत भागीरथी में अवगाहन करवाया।

विष्णुपुराण के अनुसार यह बड़ा पवित्र स्थान है। नैमिषारण्य का मार्कण्डेय पुराण में अनेक बार उल्लेख हुआ है, जहाँ 88,000 ऋषियों ने तप किया है। यहीं पर ऋषियों को सूतजी ने महाभारत तथा पुराणों की कथायें सुनाई थी।

यह भी मान्यता है कि जब ब्रह्माजी धरती पर मानव जीवन की सृष्टि करना चाहते थे, तब उन्होंने यह उत्तरदायित्व इस धरती की प्रथम जुगल जोड़ी मनु - शतरूपा को दिया था। मनु-शतरूपा ने 23,000 वर्षों तक साधना की थी।

नैमिषारण्य का प्रायः प्राचीनतम उल्लेख वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड की पुष्पिका में प्राप्त होता है। पुष्पिका में उल्लेख है कि लव और कुश ने गोमती नदी के किनारे भगवान श्रीराम के अश्वमेध यज्ञ में सात दिनों में महर्षि वाल्मीकि रचित काव्य का गायन किया।

'नैमिष' शब्द का अर्थ 'सुदर्शन चक्र' भी है। सुदर्शन चक्र की बाहरी सतह ही 'नेमी' कहलाती है। कहा जाता है कि जिस स्थान पर सुदर्शन चक्र गिरा था, उसे ही नैमिषारण्य कहा जाने लगा। यहाँ चारों ओर जंगल थे। जिस स्थान पर चक्र पृथ्वी से टकराया, वहाँ पानी का झरना निकल आया। आदि शंकराचार्य ने सम्पूर्ण भारत भ्रमण के समय नैमिषारण्य की भी यात्रा की थी।

सन्त कवि सूरदास ने भी यहां कुछ समय व्यतीत किया। यही नहीं तमिल के वैष्णव सन्तों के ग्रन्थों में भी नैमिषारण्य का उल्लेख मिलता है। नैमिषारण्य में भगवान् विष्णु की स्वयंभू आकृति है। नैमिषारण्य का एक मुख्य आकर्षण मन्दिर का तालाब है। जब आप कल्याणी अथवा मन्दिर के तालाब को देखेंगे, तो यह आमतौर पर वर्गाकार दिखेगा। दिलचस्प बात यह है कि नैमिषारण्य में चन्द्रकुण्ड (कल्याणी) आकार में गोल है।

यहाँ अनेक दर्शनीय स्थल हैं। लगभग 21 दर्शनीय स्थानों के दर्शन का हमें सौभाग्य मिला। पाठकों की सुविधार्थ संक्षिप्त वर्णन किया जा रहा है ताकि आप कभी नैमिषारण्य जाओ तो आसानी से दर्शन कर सको। आपको मार्गदर्शन मिलेगा।

1. ललिता शक्ति पीठ – देवी सती का हृदय यहीं गिरा था। यह 51 शक्तिपीठों में एक शक्तिपीठ परिगणित है। माँ के मनोहारी दर्शन देखते ही बनते हैं।
2. पंच प्रयाग कुंड।
3. कल्याण दास आश्रम – संतों का वैभव अवर्णनीय है। 100 आम के पेड़ और गिरवंश की शताधिक गायें देखकर मन प्रफुल्लित हो गया।
4. देव देवेश्वर धाम – वायुदेवता ने यहाँ पर शिवलिंग स्थापित किया। यहां नंदीश्वर नहीं है।
5. सेतुबंध रामेश्वर – यहां से कुछ ही दूरी पर स्थित है।
6. रुद्र तीर्थ – प्राचीन रुद्रेश्वर महादेव – यहां भगवान् विष्णु ने गुप्तरूप से शिवजी का रुद्राभिषेक किया। चमत्कारी स्थान है। तीन फल जल में भेंट करने पर एक या दो फल प्रसाद रूप में प्राप्त होते हैं। आम जैसा वजनी फल भी पानी पर तैरता नजर आयेगा।
7. दधीचि ऋषि आश्रम – यहां दधीचि कुंड बना हुआ है। असुरों का वध करने हेतु इन्द्रदेव दधीचि ऋषि की हड्डियाँ मांगने आये थे। दधीचि ने तुरंत स्वीकृति दे दी और अपनी अन्तिम इच्छा का भाव प्रदर्शित किया कि वे मरने से पहले सभी पवित्र नदियों के दर्शन करना चाहते हैं। उनकी अन्तिम इच्छा पूरी करने के लिए इन्द्रदेव ने जलदेवता को निर्देश देते हुए कहा कि नैमिषारण्य में पवित्र नदियां आकर अपना स्थान लें। भारत की समस्त पवित्र नदियों के स्नान का पुण्य यहां स्नान करने पर प्राप्त होता है।
8. ब्रह्म कुंड दर्शन – यह 30 किमी. दूर है। परम दर्शनीय स्थान है। यहां पर पण्डे इसके विषय में सारी कथा सुना देते हैं।
9. राज राजेश्वरी दर्शन – पराम्बा का भव्य मन्दिर। वर्णन करना लेखनी का विषय नहीं।
10. गोमती नदी – यहां श्रद्धालु प्रतिदिन स्नान करते हैं। मैया का पूजन करते हैं। त्रिपाठी परिवार व श्रोताओं ने पूज्य महाराजश्री के तत्त्वावधान में दीप दान करके महोत्सव मनाया।
11. चक्र तीर्थ – यहां बाबा भूतेश्वर नाथ का मन्दिर है। इस बारे में मान्यता है कि ये नीमसार के 33 करोड़ देवी देवताओं और 88 हजार ऋषियों के रक्षक हैं। इस मन्दिर में सुबह और शाम को भव्य आरती का आयोजन होता है।
12. त्रिशक्ति पीठ धाम।
13. शुकाश्रम – यह त्रिशक्ति पीठ धाम के समीप ही है।
14. हनुमान गढ़ी।
15. मनु शतरूपा तप:स्थली।
16. व्यास गद्दी – विश्व की सर्वोच्च पीठ व्यास गद्दी। 5500 वर्ष से अधिक पुराना वट वृक्ष है, व्यास जी ने बैठकर उन शास्त्रों को सुनाया, जिन्हें हम वेद, पुराण शास्त्र आदि के रूप में जानते हैं। यह वही वृक्ष है, जो वास्तविक व्यास गद्दी है। पेड़ आधुनिक मन्दिरों से घिरा हुआ है। वेदव्यास जी को समर्पित एक छोटा मन्दिर है।
17. सूत गद्दी – यह भी समीप ही है।
18. वेंकटेश मन्दिर – अति भव्य बना हुआ है। यहां ठहरने की भी व्यवस्था है। गृहस्थी संत संचालक है।
19. देवपुरी मन्दिर – यहाँ है 108 देवी देवताओं की मूर्तियां। 108 हिन्दू देवी देवताओं को यदि आप एक ही स्थल पर देखना चाहते हैं, तो शायद इससे बढ़िया और कोई जगह नहीं। देवपुरी मन्दिर से थोड़ा आगे चलते ही बांके रमण बिहारी, बालाजी तथा रमण बिहारी जी का चारधाम मन्दिर स्थित है। ये भव्य मन्दिर नैमिषारण्य के सबसे अधिक दर्शनीय स्थल हैं। यहां से थोड़ा आगे चलने पर गोमती घाट आपको दिखाई देगा। इस पावन घाट पर भक्तजन श्रद्धा से डुबकी लगाते हैं।

शेष पृष्ठ 21 पर......

कृष्ण माता देवकी की व्यथा

''इतने सुन्दर मुख पर दु:ख की यह कालिमा क्यों छायी हुई है?'' – वसुदेव ने गवाक्ष पर खड़ी देवकी के एक कन्धे पर हाथ रखके पूछा।

''यह कालिमा आप पुरुषों की देन है!'' देवकी उनकी ओर देखे बिना बोली। प्रथम तो वसुदेव को लगा कि देवकी कदाचित् हास्य कर रही है। परन्तु जब उन्होंने ध्यान दिया कि उसके स्वर में भी उतना ही दु:ख है, तो वे किंचित् आश्चर्यचकित हुए, ''क्या हुआ? तुम ऐसे क्यों कह रही हो?''

''तो कैसे कहूँ!'' देवकी की वाणी में अब किंचित् आवेश और व्यंग्य का मिश्रण प्रकट हुआ, ''एक पुरुष हैं–हमारे भ्राताश्री! वे हमारे विवाह के ही दिन सबके सम्मुख मुझ पर खड्ग उठा लेते हैं, केवल इसलिए कि किसी ने यह भविष्यवाणी कर दी कि हमारी आठवीं सन्तान ही उनकी मृत्यु का कारण बनेगी। जिस सम्भावित संकट के प्रस्तुत होने में अभी पर्याप्त समय शेष है, उसे लेकर ऐसा करना कहाँ से न्याय है! यदि सात सन्तान के जन्म ले लेने के बाद ऐसा कुछ किया जाता, तो समझ में भी आता; किन्तु अभी से ही हमें नगरबन्दी बना दिया गया है! अपने घर और पूरे मथुरा में कहीं भी आ–जा सकते हैं, परन्तु बाहर नहीं। और यहाँ भी तो चारों ओर पहरे बिठा दिये गये हैं।'' उन्होंने कुछ क्षण रुककर पुन: कहा, ''और एक पुरुष हैं–आप! आप उन्हें वचन दे देते हैं कि प्रत्येक सन्तान के जन्म लेते ही उसे उनके सम्मुख प्रस्तुत कर देंगे। किस लिए, उसे मृत्यु दिलाने के लिए ही न! क्या आपको मेरी, एक स्त्री एक माता की ममता का तनिक भी ध्यान नहीं रहा था; अथवा आप उनसे भयभीत हो गये थे?''

वसुदेव नितान्त आश्चर्यचकित रह गये। उनके नेत्र चौड़े हो गये; उनका मुख खुला का खुला रह गया। जब वे कुछ क्षणों तक कुछ नहीं बोले, तदनन्तर देवकी ने उनकी ओर पलटकर उनके नेत्रों में झाँकते हुए पूछा, ''अब आप कुछ कहते क्यों नहीं हैं?''

''मुझे लगता था कि विवाह के पश्चात् पत्नी और पति एक ही पक्ष होते हैं। उनमें कोई भिन्नता नहीं होती है।'' वसुदेव बोल तो रहे थे किन्तु मन्द स्वर में, ''यदि तुमने मुझे द्वितीय या अपना विरोधी पक्ष माना होता, तो मुझे कदाचित् कोई अन्तर नहीं पड़ता। परन्तु तुम मुझे कंस जैसे अत्याचारी राजा की श्रेणी में देखती हो, यह सुनकर मेरे हृदय को अपार पीड़ा पहुंची है! देवकी, मुझे तुमसे इसकी तनिक भी आशा नहीं थी!''

देवकी के आनन पर पश्चाताप की एक हल्की रेखा खिंच गयी। उन्हें अनुभव हुआ कि वसुदेव सत्य ही कह रहे हैं। वे तो स्त्री–पुरुष करके अपना दु:ख प्रकट कर रही थीं, किन्तु ऐसा करते–करते उनसे एक बड़ी भूल हो गयी। परन्तु जब वे कुछ क्षणों तक मौन ही रहीं, तो वसुदेव उनकी भावना को समझ गये। बहुत स्नेह से उनका एक हाथ पकड़कर बोले, ''चलो, हम बैठकर वार्तालाप करते हैं।'' वे दोनों पर्यंक पर बैठ जाते हैं।

तत्पश्चात् वसुदेव स्नेहपूर्ण वाणी में समझाने लगे, ''देवकी, पक्ष केवल धर्म–अधर्म, उचित–अनुचित अथवा सत्य–असत्य का होता है। हम जो कुछ भी धर्म अथवा अधर्म करते हैं, उसके लिए व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होते हैं। न कि किसी समूह, समाज आदि के आधार पर। संसार में घटित किसी भी घटना या किसी भी बात के लिए हम पूरे पुरुष अथवा स्त्री समूह को दोषी नहीं ठहरा सकते हैं। और कोई एक भी ऐसा गुण नहीं है जो केवल पुरुषों अथवा स्त्रियों में पाया जाता हो। ऐसा ही अवगुणों के साथ भी है। अंगों की बनावट, प्रसव करने न करने रूपी जो एकाध अन्तर होते हैं; वे प्रकृति या ईश्वर की देन होते हैं। न कि स्वयं किसी स्त्री अथवा पुरुष के द्वारा उत्पन्न, अर्जित किये गये गुण होते हैं।'' वसुदेव ने कुछ घड़ी मौन होकर पूछा, ''और तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि हमारी भावी सन्तानों के प्रति केवल तुम्हें ही ममता है? क्या एक पिता के रूप में मुझ पुरुष के हृदय में उनसे कोई प्रेम नहीं है?''

''तो आपने वह वचन क्यों दिया?'' ''उसे वचन देना नहीं कहते हैं, देवकी! किसी के वक्ष पर खड्ग रखकर बलात्

वचन नहीं लिया जाता है। वचन वह होता है; जो स्वेच्छा से, प्रसन्नतापूर्वक स्वयं प्रस्तुत होकर दिया जाये।''

''जो भी हो, आप हमारी होने वाली सन्तानों को उस दुष्ट के सम्मुख प्रस्तुत करेंगे ही!'' देवकी का आवेश कम नहीं हो रहा था।

''समझने का प्रयास करो। कंस मेरी नहीं, तुम्हारी हत्या करने जा रहा था। यह सोचकर कि तुम ही नहीं रहोगी तो सन्तान कैसे उत्पन्न होंगी, और वह अपने काल को टाल देगा। वैसे में, एक पति होने के नाते मेरा तात्कालिक धर्म यही था कि मैं कैसे भी तुम्हारी रक्षा करूँ। मैं अपना खड्ग लेकर उससे युद्ध कर सकता था; किन्तु वह बलिदान नहीं, आत्महत्या करने के समान होता। एक तो कंस और उसकी सेना के पीछे जरासन्ध, भौमासुर, बाणासुर और कालयवन की सेनाओं का भी साथ है। इतने बड़े संगठन से लड़ना तभी सार्थक होता है, जब अपना संगठन उससे भिड़ने के तुल्य हो। जबकि तुमने देखा था कि उस दिन कंस का विरोध मेरे अतिरिक्त किसी ने भी नहीं किया था।... और मैं यह भी जानता था कि मुझे मार देने के बाद भी कंस शान्त नहीं बैठता, तुम्हारी हत्या करता ही।''

देवकी के मुख पर से दु:ख की कालिमा शनै:-शनै: उतरने लगी, आश्वस्ति का रंग चढ़ने लगा। यद्यपि वह वसुदेव की ओर देखती रहीं, बोली कुछ नहीं। तो वसुदेव पुन: बोले,''अभी तो प्रथम सन्तान के जन्म लेने में ही बहुत समय शेष है, तो सम्भावित कष्टों की कल्पना करके दुखी होना बुद्धिमानी नहीं है। हम दोनों प्रत्यक्ष न सही, अप्रत्यक्ष रूप से युद्ध करते रहेंगे। जब जैसी परिस्थिति आयेगी, साथ मिलकर संघर्ष करते रहेंगे।... अन्यथा तुम, तुम्हारी सभी छह बड़ी बहनें, पिता समेत कई मथुरावासी कहते रहते हैं कि पूरे मथुरा में यदि सर्वाधिक सुन्दर, वीर, बुद्धिमान और चरित्रवान कोई है तो वह वसुदेव है। मुझे नहीं पता कि इसमें कितनी सच्चाई है। किन्तु इतना अवश्य जानता हूँ कि मैं आज भी वही वसुदेव हूँ, जो पूर्व में था! यदि तुम्हारी तनिक भी इच्छा हो तो तुम केवल संकेत-भर कर दो, मैं अभी के अभी कंस से युद्ध करके प्राणान्त करने को प्रस्तुत हूँ।''

देवकी का मुख दमक उठा। उनके नयनों में अपने स्वामी के प्रति और ऐसे स्वामी की भार्या होने का मान प्रकट होने लगा। वे स्वयं को रोक नहीं पायीं, उठकर उनके वक्ष से लग गयीं। वसुदेव उन्हें अपनी भुजाओं में समेटकर उनकी पीठ प्रेमपूर्वक थपथपाने लगे।

- भगवद्गीता केन्द्र से साभार

पृष्ठ 19 का शेष.......

20. रामानुज कोट, सोने का खंभा - वैकुण्ठनाथ भगवान् के मनोहारी दर्शन। प्रति दिन गोष्ठी प्रसाद वितरण होता है। यहीं पर भागवत कथा महोत्सव का आयोजन किया गया था। ठहरने की उत्तम व्यवस्था, सुसज्जित वातानुकूलित कमरे यात्रियों को उपलब्ध कराये जाते हैं।
21. छोटी अयोध्या - कुछ ही दूरी पर स्थित है। इसके अतिरिक्त नेपाली मन्दिर, काशीकुंड, आदि भी दर्शनीय स्थल हैं।

कैसे पहुंचें नैमिषारण्य

नैमिषारण्य तीर्थ उत्तरप्रदेश राज्य के सीतापुर जिले में स्थित है। नीमसार सीतापुर से 35 कि.मी. दूर है। लखनऊ से इसकी दूरी 88 कि.मी. है। नीमसार के निकट ही हरदोई जनपद है। हरदोई से नैमिष की दूरी 40 कि. मी. है। यदि आप वायु मार्ग से जाना चाहते हैं तो सबसे निकटवर्ती हवाई अड्डा लखनऊ है। आप रेलवे मार्ग से जाना चाहते हैं, तो लखनऊ तक चले जाइए, वहाँ से टैक्सी करके चार बाग बस स्टैण्ड से बस जाती है। कानपुर और बालामऊ से भी नीमसर के लिए पैसेंजर ट्रेन उपलब्ध है। यदि आप सड़क मार्ग से नीमसर आना चाहते हैं तो लखनऊ, सीतापुर एवं हरदोई से आप आ सकते है। लखनऊ से टैक्सी भी किराये पर मिल जाती है। सस्ती महंगी यह आपके बुद्धिबल पर निर्भर करती है। कलियुग है, कहते हैं- नैमिष में कलियुग का प्रवेश नहीं, यह धारणा भ्रामक है। यात्रा के साथ हमारा श्री मद् भागवत कथा महोत्सव सांनद सम्पन्न हुआ। ठाकुर-ठकुरानी की कृपा हुई तो अग्रिम कथा वृन्दावन गोवर्धन परिसर में होगी।

- प्रभुलाल शास्त्री,
ट्रस्टी - पाली (राजस्थान)

‘करम प्रधान बिस्व करि रखा’

श्रीरामचन्द्रजी को वन में गये छठी रात बीत रही थी। जब आधी रात हुई, तब राजा दशरथ को उस पहले के किये हुए दुष्कर्म का स्मरण हुआ। पुत्रशोक से पीड़ित हुए महाराज ने अपने उस दुष्कर्म को याद करके पुत्रशोक से व्याकुल हुई कौसल्या से इस प्रकार कहना आरम्भ किया। ‘कल्याणि! मनुष्य शुभ या अशुभ जो भी कर्म करता है, भद्रे! अपने उसी कर्म के फलस्वरूप सुख या दु:ख कर्ता को प्राप्त होते हैं।

कौसल्ये! पिता के जीवनकाल में जब मैं केवल राजकुमार था, एक अच्छे धनुर्धर के रूप में मेरी ख्याति फैल गयी थी। सब लोग यही कहते थे कि ‘राजकुमार दशरथ शब्दवेधी बाण चलाना जानते हैं।’ इसी ख्याति में पड़कर मैंने एक पाप कर डाला था।

देवि! उस अपने ही किये हुए कुकर्म का फल मुझे इस महान् दु:ख के रूप में प्राप्त हुआ है। जैसे दूसरा कोई गँवार मनुष्य पलाश के फूलों पर ही मोहित हो उसके कड़वे फल को नहीं जानता, उसी प्रकार मैं भी ‘शब्दवेध बाण-विद्या’ की प्रशंसा सुनकर उस पर लट्टू हो गया। उसके द्वारा ऐसा क्रूरतापूर्ण पापकर्म बन सकता है और ऐसा भयंकर फल प्राप्त हो सकता है, इसका ज्ञान मुझे नहीं हुआ।

देवि! तब तुम्हारा विवाह नहीं हुआ था और मैं अभी युवराज ही था, उन्हीं दिनों की बात है। वर्षा-ऋतु का अत्यन्त सुखद और सुहावना समय था, मैं धनुष-बाण लेकर रथ पर सवार हो शिकार खेलने के लिये सरयू नदी के तट पर गया था। मेरी इन्द्रियाँ मेरे वश में नहीं थीं। मैंने सोचा था कि पानी पीने के लिये घाट पर रात के समय जब कोई उपद्रवकारी भैंसा, मतवाला हाथी अथवा सिंह-व्याघ्र आदि दूसरा कोई हिंसक जन्तु आयेगा तो उसे मारूँगा।

उस समय वहाँ सब ओर अन्धकार छा रहा था। मुझे अकस्मात् पानी में घड़ा भरने की आवाज सुनायी पड़ी। मेरी दृष्टि तो वहाँ तक पहुँचती नहीं थी, किंतु वह आवाज मुझे हाथी के पानी पीते समय होनेवाले शब्द के समान जान पड़ी। तब मैंने यह समझकर कि हाथी ही अपनी सूँड़ में पानी खींच रहा होगा; अत: वही मेरे बाण का निशाना बनेगा। तरकस से एक तीर निकाला और उस शब्द को लक्ष्य करके चला दिया। वह दीप्तिमान् बाण विषधर सर्प के समान भयंकर था।

वह उष:काल की वेला थी। विषैले सर्प के सदृश उस तीखे बाण को मैंने ज्यों ही छोड़ा, त्यों ही वहाँ पानी में गिरते हुए किसी वनवासी का हाहाकार मुझे स्पष्ट रूप से सुनायी दिया। मेरे बाण से उसके मर्म में बड़ी पीड़ा हो रही थी। उस पुरुष के धाराशायी हो जाने पर वहाँ यह मानव वाणी प्रकट हुई– आह! मेरे जैसे तपस्वी पर शस्त्र का प्रहार कैसे सम्भव हुआ? मैं तो नदी के इस एकान्त तट पर रात में पानी लेने के लिये आया था। किसने मुझे बाण मारा है? मैंने किसका क्या बिगाड़ा था? मैं तो सभी जीवों को पीड़ा देने की वृत्ति का त्याग करके ऋषि-जीवन बिताता था, वन में रहकर जंगली फल-मूलों से ही जीविका चलाता था। मुझ-जैसे निरपराध मनुष्य का शस्त्र से वध क्यों किया जा रहा है?

मुझे अपने इस जीवन के नष्ट होने की उतनी चिन्ता नहीं है, मेरे मारे जाने से मेरे माता-पिता को जो कष्ट होगा, उसी के लिये मुझे बारम्बार शोक हो रहा है। मैंने इन दोनों वृद्धों का बहुत समय से पालन-पोषण किया है, अब मेरे शरीर के न रहने पर ये किस प्रकार जीवन-निर्वाह करेंगे?

ये करुणा भरे वचन सुनकर मेरे मन में बड़ी व्यथा हुई। कहाँ तो मैं धर्म की अभिलाषा रखने वाला था और कहाँ यह अधर्म का कार्य बन गया। उस समय मेरे हाथों से धनुष और बाण छूटकर पृथ्वी पर गिर पड़े। रात में विलाप करते हुए ऋषि का वह करुण वचन सुनकर मैं शोक के वेग से घबरा उठा। मेरी चेतना अत्यन्त विलुप्त-सी होने लगी।

मेरे हृदय में दीनता छा गयी, मन बहुत दु:खी हो गया। सरयू के किनारे उस स्थान पर जाकर मैंने देखा– ‘एक तपस्वी बाण से घायल होकर पड़े हैं। उनकी जटाएँ बिखरी हुई हैं, घड़े का जल गिर गया है तथा सारा शरीर धूल और खून में सना हुआ है। वे बाण से बिंधे हुए पड़े थे। उनकी अवस्था देखकर मैं डर गया, मेरा चित्त ठिकाने नहीं था।

उन्होंने दोनों नेत्रों से मेरी ओर इस प्रकार देखा, मानो अपने तेज से मुझे भस्म कर देना चाहते हों। वे कठोर वाणी में यों बोले– 'राजन्! वन में रहते हुए मैंने तुम्हारा कौन –सा अपराध किया था, जिससे तुमने मुझे बाण मारा? मैं तो माता–पिता के लिये पानी लेने की इच्छा से यहाँ आया था। तुमने एक ही बाण से मेरा मर्म विदीर्ण करके मेरे दोनों अन्धे और बूढ़े माता–पिता को भी मार डाला। वे दोनों बहुत दुबले और अन्धे हैं। निश्चय ही प्यास से पीड़ित होकर वे मेरी प्रतीक्षा में बैठे होंगे। वे देर तक मेरे आगमन की आशा लगाये दुःखदायिनी प्यास लिये बाट जोहते रहेंगे।

अतः रघुकुल नरेश! अब तुम्हीं जाकर शीघ्र ही मेरे पिता को यह समाचार सुना दो– राजन्! यह पगडण्डी उधर ही गयी है, जहाँ मेरे पिता का आश्रम है। तुम जाकर उन्हें प्रसन्न करो, जिससे वे कुपित होकर तुम्हें शाप न दें। राजन्! मेरे शरीर से इस बाण को निकाल दो। यह तीखा बाण मेरे मर्म स्थान को उसी प्रकार पीड़ा दे रहा है, जैसे नदी के जल का वेग उसके कोमल बालुकामय ऊँचे तट को छिन्न–भिन्न कर देता है।'

मुनिकुमार की यह बात सुनकर मेरे मन में यह चिन्ता समायी कि यदि बाण नहीं निकालता हूँ तो इन्हें क्लेश होता है और निकाल देता हूँ तो ये अभी प्राणों से भी हाथ धो बैठते हैं। इस प्रकार बाण को निकालने के विषय में मुझ दीन–दुःखी और शोकाकुल दशरथ की इस चिन्ता को उस समय मुनिकुमार ने लक्ष्य किया।

यथार्थ बात को समझ लेने वाले उन महर्षि ने मुझे अत्यन्त ग्लानि में पड़ा हुआ देख बड़े कष्ट से कहा– 'राजन्! मुझे बड़ा कष्ट हो रहा है। मेरी आँखें चढ़ गयी हैं, अंग–अंग में तड़पन हो रही है। मुझसे कोई चेष्टा नहीं बन पाती। अब मैं मृत्यु के समीप पहुँच गया हूं, फिर भी धैर्य के द्वारा शोक को रोककर अपने चित्त को स्थिर करता हूँ, अब मेरी बात सुनो– 'मुझसे ब्रह्महत्या हो गयी'– इस चिन्ता को अपने हृदय से निकाल दो। राजन्! मैं ब्राह्मण नहीं हूँ, इसलिये तुम्हारे मन में ब्राह्मणवध को लेकर कोई व्यथा नहीं होनी चाहिये। नरश्रेष्ठ! मैं वैश्य पिता द्वारा शूद्रजातीय माता के गर्भ से उत्पन्न हुआ हूँ।'

बाण से मर्म में आघात पहुँचने के कारण वे बड़े कष्ट से इतना ही कह सके। उनकी आँखें घूम रही थीं। उनसे कोई चेष्टा नहीं बनती थी। वे पृथ्वी पर पड़े–पड़े छटपटा रहे थे और अत्यन्त कष्ट का अनुभव करते थे। उस अवस्था में मैंने उनके शरीर से उस बाण को निकाल दिया। फिर तो अत्यन्त दीन होकर उन तपोधन ने मेरी ओर देख करके अपने प्राण त्याग दिये।

पानी में गिरने के कारण उनका सारा शरीर भीग गया। मर्म में आघात लगने के कारण बड़े कष्ट से विलाप करके और बारम्बार उच्छ्वास लेकर उन्होंने प्राणों का त्याग किया था। कल्याणी कौसल्ये! उस अवस्थामें सरयू के तट पर मरे पड़े मुनिपुत्र को देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ।'

उन महर्षि के अनुचित वध का स्मरण करके धर्मात्मा रघुकुल नरेश ने अपने पुत्र के लिये विलाप करते हुए ही रानी कौसल्या से इस प्रकार कहा– 'देवि! अनजाने में यह महान् पाप कर डालने के कारण मेरी सारी इन्द्रियाँ व्याकुल हो रही थीं। मैं अकेला ही बुद्धि लगाकर सोचने लगा, अब किस उपाय से मेरा कल्याण हो?

तदनन्तर उस घड़े को उठाकर मैंने सरयू के उत्तम जल से भरा और उसे लेकर मुनिकुमार के बताये हुए मार्ग से उनके आश्रम पर गया। वहाँ पहुँचकर मैंने उनके दुबले, अन्धे और बूढ़े माता–पिता को देखा, जिनका दूसरा कोई सहायक नहीं था। उनकी अवस्था पंख कटे हुए दो पक्षियों के समान थी।

मेरे पैरों की आहट सुनकर वे मुनि इस प्रकार बोले– 'बेटा! देर क्यों लगा रहे हो? शीघ्र पानी ले आओ। हम असहाय हैं, तुम्हीं हमारे सहायक हो। हम अन्धे हैं, तुम्हीं हमारे नेत्र हो। हम लोगों के प्राण तुम्हीं में अटके हुए हैं। बताओ, तुम बोलते क्यों नहीं हो?' मुनि को देखते ही मेरे मन में भय–सा समा गया। मेरी जबान लड़खड़ाने लगी। किसी प्रकार अस्पष्ट वाणी में मैंने बोलने का प्रयास किया।

मैंने कहा– 'महात्मन्! मैं आपका पुत्र नहीं, दशरथ नामका एक क्षत्रिय हूँ। मैंने अपने कर्मवश यह ऐसा कलंक पाया है, जिसकी सत्पुरुषों ने सदा निन्दा की है। भगवन! मैं धनुष बाण लेकर सरयू के तट था। मेरे आने का उद्देश्य यह

था कि कोई हिंसक पशु अथवा हाथी घाट पर पानी पीने के लिये आये तो मैं उसे मारूँ।

थोड़ी देर बाद मुझे जल में घड़ा भरने का शब्द सुनायी पड़ा। मैंने समझा कि कोई हाथी पानी पी रहा है, इसलिये उस पर बाण चला दिया। फिर सरयू के तट पर जाकर देखा कि मेरा बाण एक तपस्वी की छाती में लगा है और वे मृत प्राय होकर धरती पर पड़े हैं। उस बाण से उन्हें बड़ी पीड़ा हो रही थी, अत: उस समय उन्हीं के कहने से मैंने सहसा वह बाण उनके मर्म-स्थान से निकाल दिया। बाण निकलने के साथ ही वे तत्काल स्वर्ग सिधार गये। उन्होंने आप दोनों पूजनीय अन्धे पिता-माता के लिये बड़ा शोक और विलाप किया था। इस प्रकार अनजाने में मेरे हाथ से आपके पुत्र का वध हो गया है। ऐसी अवस्था में मेरे प्रति जो शाप या अनुग्रह शेष हो, उसे देने के लिये आप महर्षि मुझ पर प्रसन्न हों।'

मैंने अपने मुँह से अपना पाप प्रकट कर दिया था, इसलिये मेरी क्रूरता से भरी हुई बात सुनकर भी वे पूज्यपाद महर्षि मुझे कठोर दण्ड-भस्म हो जाने का शाप नहीं दे सके। उनके मुख पर आँसुओं की धारा बह चली और वे शोक से मूर्च्छित होकर दीर्घ नि:श्वास लेने लगे। मैं हाथ जोड़े उनके सामने खड़ा था।

उस समय उन महातेजस्वी मुनि ने मुझ से कहा- 'राजन्! यदि यह अपना पापकर्म तुम न बताते तो शीघ्र ही तुम्हारे मस्तक के सैकड़ों-हजारों टुकड़े हो जाते। नरेश्वर यदि क्षत्रिय जान-बूझकर विशेषत: किसी वानप्रस्थी का वध कर डाले तो वह वज्रधारी इन्द्र ही क्यों न हो, वह उसे अपने स्थान से भ्रष्ट कर देता है। तुमने अनजाने में यह पाप किया है, इसीलिये अभी तक जीवित हो। यदि जान-बूझकर किया होता तो समस्त रघुवंशियों का कुल ही नष्ट हो जाता, अकेले तुम्हारी तो बात ही क्या है?'

उन्होंने मुझसे यह भी कहा- 'नरेश्वर! तुम हम दोनों को उस स्थान पर ले चलो, जहाँ हमारा पुत्र मरा पड़ा है। इस समय हम उसे देखना चाहते हैं। यह हमारे लिये उसका अन्तिम दर्शन होगा।'

तब मैं अकेला ही अत्यन्त दु:ख में पड़े हुए उन दम्पती को उस स्थान पर ले गया, जहाँ उनका पुत्र काल के अधीन होकर पृथ्वी पर अचेत पड़ा था। उसके सारे अंग खून से लथपथ हो रहे थे, मृगचर्म और वस्त्र बिखरे पड़े थे। मैंने पत्नी सहित मुनि को उनके पुत्रके शरीर का स्पर्श कराया।

वे दोनों तपस्वी अपने उस पुत्र का स्पर्श करके उसके अत्यन्त निकट जाकर उसके शरीर पर गिर पड़े। फिर पिता ने पुत्र को सम्बोधित करके उससे कहा-'अब कौन ऐसा है, जो कन्द, मूल और फल लाकर मुझ अकर्मण्य, अन्नसंग्रह से रहित और अनाथ को प्रिय अतिथि की भाँति भोजन करायेगा। बेटा! तुम्हारी यह तपस्विनी माता अन्धी, बूढ़ी, दीन तथा पुत्र के लिये उत्कण्ठित रहनेवाली है। मैं स्वयं अन्धा होकर इसका भरण-पोषण कैसे करूँगा? पुत्र ठहरो, आज यमराज के घर न जाओ। कल मेरे और अपनी माता के साथ चलना। बेटा! तुम निष्पाप हो, किंतु एक पापकर्मा क्षत्रिय ने तुम्हारा वध किया है, इस कारण मेरे सत्य के प्रभाव से तुम शीघ्र ही उन लोकों में जाओ, जो अस्त्रयोधी शूरवीरों को प्राप्त होते हैं। बेटा! युद्ध में पीठ न दिखानेवाले शूरवीर सम्मुख युद्ध में मारे जाने पर जिस गति को प्राप्त होते हैं, उसी उत्तम गति को तुम भी जाओ। हम जैसे तपस्वियों के इस कुल में पैदा हुआ कोई पुरुष बुरी गति को नहीं प्राप्त हो सकता। बुरी गति तो उसकी होगी, जिसने मेरे बान्धवरूप तुम्हें अकारण मारा है?'

इस प्रकार वे दीनभाव से बारम्बार विलाप करने लगे। तत्पश्चात् अपनी पत्नी के साथ वे पुत्र को जलांजलि देने के कार्य में प्रवृत्त हुए। इसी समय वह धर्मज्ञ मुनिकुमार अपने पुण्यकर्मों के प्रभाव से दिव्य रूप धारण करके शीघ्र ही इन्द्र के साथ स्वर्ग को जाने लगा।

इन्द्र सहित उस तपस्वी ने अपने दोनों बूढ़े पिता-माता को एक मुहूर्त तक आश्वासन देते हुए उनसे बातचीत की; फिर वह अपने पिता से बोला- 'मैं आप दोनों की सेवा से महान् स्थान को प्राप्त हुआ हूँ, अब आप लोग भी शीघ्र ही मेरे पास आ जाइयेगा।' यह कहकर वह जितेन्द्रिय मुनिकुमार उस सुन्दर आकारवाले दिव्य विमान से शीघ्र ही देवलोक को चला गया। तदनन्तर पत्नीसहित उन

शेष पृष्ठ 32 पर......

नवरात्र की आध्यात्मिकता एवं वैज्ञानिकता

संस्कृत व्याकरण के अनुसार नवरात्रि कहना त्रुटिपूर्ण है। नौ रात्रियों का समूह होने के कारण से द्वन्द समास होने से यह शब्द पुलिंग रूप 'नवरात्र' कहना उचित है।

पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा के काल में एक साल की चार संधियाँ हैं। उनमें मार्च व सितंबर माह में पड़ने वाली संधियों में साल के दो मुख्य नवरात्र पड़ते हैं। इस समय रोगाणु आक्रमण की सर्वाधिक संभावना होती है। दिन और रात के तापमान मे अंतर के कारण, ऋतु संधियों में प्राय: शारीरिक बीमारियाँ बढ़ती हैं।

वास्तव में, इस शक्ति साधना के पीछे छुपा व्यावहारिक पक्ष यह है कि नवरात्र का समय मौसम के बदलाव का होता है। आयुर्वेद के अनुसार इस बदलाव से जहां शरीर मे वात, पित्त, कफ मे दोष पैदा होते हैं, वहीं बाहरी वातावरण में रोगाणु अनेक बीमारियों का कारण बनते हैं। सुखी-स्वस्थ जीवन के लिये इनसे बचाव बहुत जरूरी है।

नवरात्र के विशेष काल में देवी उपासना के माध्यम से खान-पान, रहन-सहन और देव स्मरण में अपनाये गये संयम और अनुशासन तन व मन को शक्ति और ऊर्जा देते हैं।

नवरात्र का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक संबंध इन नौ से सीधा जुड़ा है -

9 इंद्रियाँ - आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा, वाक्, मन, बुद्धि, आत्मा।

नौ ग्रह जो हमारे सभी शुभ अशुभ के कारक होते हैं - बुध, शुक्र, चंद्र, बृहस्पति, सूर्य, मंगल, केतु, शनि, राहु।

नौ उपनिषद - ईश, केन, कठ, प्रश्न, मंडूक, मांडूक्य, एतरेय, तैतिरीय, श्वेताश्वतर।

नवदुर्गा यानी 9 देवियाँ हैं - शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्रि।

शरीर और आत्मा के सुचारू रूप से क्रियाशील रखने के लिये नौ द्वारों की शुद्धि का पर्व नौ दिन मनाया जाता है। इनको व्यक्तिगत रूप से महत्व देने के लिये नौ दिन नौ दुर्गाओं के लिये कहे जाते हैं। सात्विक आहार के व्रत का पालन करने से शरीर की शुद्धि, साफ सुथरे शरीर में शुद्ध बुद्धि, उत्तम विचारों से ही उत्तम कर्म, कर्मों से सच्चरित्रता और क्रमश: मन शुद्ध होता है। स्वच्छ मन मंदिर में ही तो ईश्वर की शक्ति का स्थायी निवास होता है।

नवरात्र में निम्न आहार को अधिक महत्व दिया गया है जिसका सीधा सीधा संबंध हमारे स्वास्थ और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिये ही है -

1. कुट्टू - शैल पुत्री
2. दूध दही - ब्रह्मचारिणी
3. चौलाई - चंद्रघंटा
4. पेठा - कूष्माण्डा
5. श्यामक चावल - स्कन्दमाता
6. हरी तरकारी - कात्यायनी
7. काली मिर्च व तुलसी - कालरात्रि
8. साबूदाना - महागौरी
9. आंवला - सिद्धिदात्री !

अब जानते हैं कि नवरात्र को 'नवरात्र' ही क्यों कहते हैं? क्योंकि 'रात्रि' शब्द सिद्धि का प्रतीक माना जाता है। भारत के प्राचीन ऋषि मुनियों ने रात्रि को दिन की अपेक्षा अधिक महत्व दिया है। यही कारण है कि दीपावली, होलिका, शिवरात्रि और नवरात्र आदि उत्सवों को रात में ही मनाने की परंपरा है। यदि, रात्रि का कोई विशेष रहस्य न होता तो ऐसे उत्सवों को रात्रि न कह कर दिन ही कहा जाता, जैसे शिव दिन आदि। दिन में आवाज दी जाये तो वह दूर तक नहीं जायेगी। किंतु रात्रि को आवाज दी जाये तो वह बहुत दूर तक जाती है।

इसके पीछे ध्वनि प्रदूषण के अलावा एक वैज्ञानिक तथ्य यह भी है कि दिन में सूर्य की किरणें आवाज की तरंगों और रेडियो तरंगों को आगे बढ़ने से रोक देती हैं। रेडियो इस बात का जीता जागता उदाहरण है। कम शक्ति के रेडियो स्टेशनों को दिन में पकड़ना अर्थात सुनना मुश्किल होता है, जबकि सूर्यास्त के बाद छोटे से छोटा रेडियो स्टेशन भी आसानी से सुना जा सकता है। मनीषियों ने रात्रि के महत्व को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में समझने और समझाने का प्रयत्न किया। रात्रि में प्रकृति के बहुत सारे

अवरोध खत्म हो जाते हैं।आधुनिक विज्ञान भी इस बात से सहमत है। हमारे ऋषि मुनि आज से कितने ही हजारों वर्ष पूर्व ही प्रकृति के इन वैज्ञानिक रहस्यों को जान चुके थे।

इसी वैज्ञानिक सिद्धांत के आधार पर मंत्र जप की विचार तरंगों में भी दिन के समय अवरोध रहता है, इसीलिए ऋषि मुनियों ने रात्रि का महत्व दिन की अपेक्षा बहुत अधिक बताया है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए , साधक गण रात्रि में संकल्प और उच्च अवधारणा के साथ अपने शक्तिशाली विचार तरंगों को वायुमंडल में भेजते हैं ,उनकी कार्यसिद्धि अर्थात मनोकामना सिद्धि, उनके शुभ संकल्प के अनुसार उचित समय और ठीक विधि के अनुसार करने पर अवश्य पूर्ण होती है।

सामान्यजन दिन में ही पूजा पाठ निपटा लेते हैं, जबकि एक साधक इस अवसर की महत्ता जानता है और ध्यान, मंत्र जप आदि के लिए रात्रि का समय ही चुनता है।

नवरात्र से नवग्रहों का संबंध भी है। चैत्र नवरात्र प्राय: 'मीन मेष' की संक्रांति पर आती है। नवग्रह में कोई भी ग्रह अनिष्ट फल देने जा रहा हो तो शक्ति उपासना करने से विशेष लाभ मिलता है। यथा–

– सूर्य ग्रह के कमजोर रहने पर स्वास्थ्य लाभ के लिये शैलपुत्री की उपासना से लाभ मिलता है।

– चंद्रमा के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिये कूष्मांडा देवी की विधि विधान से नवरात्रि में साधना करें।

– मंगल ग्रह के दुष्प्रभाव से बचने के लिये स्कंदमाता,

– बुध ग्रह की शांति तथा अर्थव्यवस्था में वृद्धि के लिये कात्यायनी देवी,

– गुरु ग्रह के अनुकूलता के लिये महागौरी,

– शुक्र के शुभत्व के लिये सिद्धिदात्रि तथा

– शनि के दुष्प्रभाव को दूर कर शुभता पाने के लिये कालरात्रि की उपासना सार्थक रहती है।

– राहु की शुभता प्राप्त करने के लिये ब्रह्माचारिणी की उपासना करनी चाहिए।

– केतु के विपरीत प्रभाव को दूर करने के लिये चंद्रघंटा की साधना अनुकूलता देती है।

नवरात्र वर्ष में चार बार आते हैं, जिसमें चैत्र और आश्विन की नवरात्रियों का विशेष महत्व है। चैत्र नवरात्र से ही विक्रम संवत का आरंभ होता है। इन दिनों प्रकृति से एक विशेष तरह की शक्ति निकलती है। इस शक्ति को ग्रहण करने के लिये इन दिनों में शक्ति पूजा या नवदुर्गा की पूजा का विधान है, इसमें माँ की नौ शक्तियों की पूजा अलग-अलग दिन की जाती है।

इस पर्व में तीन प्रमुख हिंदू देवियों- पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती के नौ स्वरुपों श्री शैलपुत्री, श्री ब्रह्मचारिणी, श्री चंद्रघंटा, श्री कुष्मांडा, श्री स्कंदमाता, श्री कात्यायनी, श्री कालरात्रि, श्री महागौरी और श्री सिद्धिदात्री का पूजन विधि विधान से किया जाता है।

दुर्गासप्तशती के अनुसार -

''प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्माचारिणी !
तृतीयं चंद्रघण्टेति कुष्माण्डेति चतुर्थकम् !
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च !
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमं !
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गा प्रकीर्तिता: !''

इनकी आराधना करने से कई प्रकार की गुप्त सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

- भगवद्गीता केन्द्र से साभार

चोरी से छुटकारा

एक चोर सन्त गुरुनानक जी के पास पहुँचा और इस बुरी आदत से छुटकारा पाने का उपाय उसने पूछा। नानक जी ने उपाय बताये, वे उससे निभते न थे। एक के बाद एक उपाय बदलते-बदलते जब बहुत दिन बीत गये और किसी उपाय से भी वह आदत न छूटी तो उन्होंने चोर को बताया कि तुम अपने पाप सबके सामने प्रकट करने लगो। इससे अब चोर का बार-बार आना और पूछना समाप्त हो गया और उसकी आदत भी सुधर गयी। पाप प्रकट करने में उसे लज्जा लगती थी, अत: उसने चोरी करना ही बन्द कर दिया।

मृत्यु का सच

मृत्यु के बारे में एक ऐसा सच जो आपको हैरान कर सकता है। एक संग्रहणीय आलेख।

प्रोफेसर डॉ. लोपा मेहता, जो मुंबई के KEM मेडिकल कॉलेज में एनाटॉमी डिपार्टमेंट की हैड थी ने 78 साल की उम्र में अपना Living Will बनाया कि जब मेरा शरीर जवाब देने लगे और लौटने की कोई गुंजाइश न बचे, तब मेरा इलाज नहीं किया जाए। न वेंटिलेटर, न ट्यूब, न अस्पताल में बेवजह की दौड़। वो चाहती हैं कि आखिरी वक्त शांति से बीते, जहाँ इलाज की जल्दी नहीं, समझदारी हो। डॉ. लोपा ने केवल यह दस्तावेज़ ही नहीं लिखा बल्कि एक शोध-पत्र भी प्रकाशित किया है जिसमें मृत्यु को एक स्वाभाविक, समय-निर्धारित, जैविक प्रक्रिया के रूप में समझाया गया है।

यहां से कृपया गंभीर होकर पढ़ा जाय। उनका कहना है कि आधुनिक चिकित्सा मृत्यु को कभी स्वतंत्र रूप में देख ही नहीं पाई। चिकित्सा पद्धतियां मानती रहीं कि मौत हमेशा किसी बीमारी की वजह से होती है और अगर बीमारी का इलाज हो जाए तो मौत टाली जा सकती है लेकिन वे गलत हैं। उनका चिकित्सा विज्ञान बाद में बना, शरीर का विज्ञान पहले से है और यह शरीर का विज्ञान चिकित्सा विज्ञान से कहीं अधिक गहरा है। उनका तर्क है कि शरीर कोई अनंत चलने वाला यंत्र नहीं है। यह एक सीमित प्रणाली है, जिसमें एक निश्चित जीवन-ऊर्जा होती है। यह ऊर्जा हमें किसी टंकी से नहीं, बल्कि सूक्ष्म शरीर के माध्यम से मिलती है। वही सूक्ष्म शरीर जिसे अनुभव तो हर कोई करता है, पर देखा नहीं जा सकता, मन, बुद्धि, स्मृति, और चेतना, इन्हीं से मिलकर बना है यह सिस्टम।

यह सूक्ष्म शरीर एक माध्यम है, जिससे जीवन-शक्ति आती है और पूरे शरीर में फैलती है। यही शक्ति शरीर को जीवित रखती है। यह नाड़ी, धड़कन, पाचन और सोचने की क्षमता, सब कुछ उसी के भरोसे चलता है। लेकिन यह शक्ति अनंत नहीं है। हर शरीर में इसकी एक निश्चित मात्रा होती है। जैसे किसी मशीन में फिक्स बैटरी हो, न ज़्यादा हो सकती है, न कम। जितनी चाभी भरी राम ने उतना चले खिलौना टाइप।

डॉ. लोपा लिखती हैं कि जब शरीर में मौजूद इस ऊर्जा का अंतिम अंश खर्च हो जाता है, तो सूक्ष्म शरीर अलग हो जाता है। यही वो क्षण होता है, जब देह स्थिर हो जाती है, और हम कहते हैं ''प्राण निकल गया।'' यह प्रक्रिया न तो किसी बीमारी से जुड़ी है और न किसी चूक से। यह शरीर की अपनी आंतरिक गति है, जो गर्भ में ही शुरू हो जाती है और जब यह गति पूरी हो जाती है, तब मृत्यु हो जाती है। इस ऊर्जा का व्यय हर पल होता रहता है। एक-एक कोशिका, एक-एक अंग, धीरे-धीरे अपने जीवन की लंबाई पूरी करते हैं और जब संपूर्ण शरीर का कोटा खत्म होता है, तब शरीर शांत हो जाता है।

मौत का समय कोई घड़ी से नापा गया क्षण नहीं होता। यह एक जैविक समय है, हर व्यक्ति के लिए अलग। किसी का जीवन 35 साल में पूरा होता है, किसी का 90 में लेकिन दोनों ही अपनी पूरी इकाई जीते हैं। कोई अधूरा नहीं मरता, अगर हम उसे मजबूरी या हार न कहें।

डॉ. लोपा ने अपने लेख में ये भी कहा है कि आधुनिक चिकित्सा जब मृत्यु को टालने की जिद करती है, तो वो केवल शरीर नहीं, पूरे परिवार को थका देती है। ICU में महीने भर की साँसें कभी कभी वर्षों की कमाई ले जाती हैं। रिश्तेदार कहते रह जाते हैं ''अभी उम्मीद है'', पर मरीज की देह कब की कह चुकी होती है ''बस अब बहुत हो गया।''

इसीलिए उन्होंने लिखा है कि जब मेरा समय आए, तो बस KEM ले जाना। जहाँ मुझे भरोसा है कि कोई अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं होगा। इलाज के नाम पर खिंचाई नहीं की जाएगी। मेरे शरीर को रोका नहीं जाएगा, जाने दिया जाएगा। अब सवाल ये है ,

क्या हम सबने अपने लिए ऐसा कुछ सोचा है? क्या हमारा परिवार उस इच्छा का सम्मान करेगा? क्या इच्छा का सम्मान करने वाला व्यक्ति समाज में सम्मान पा सकेगा? क्या हमारे देश के अस्पतालों में ऐसी इच्छाओं की इज्जत बची है? या अब भी हर सांस पर बिल बनेगा, और हर मौत पर आरोप?

सब इतना आसान नहीं लगता है, तर्क और इमोशन का मैनेजमेंट शायद सबसे कठिन कामों में से एक है ।

अगर मौत को एक नियत, शांत और शरीर के भीतर से तय प्रक्रिया की तरह देखना शुरू करें, तो शायद मौत से डर भी कम हो, और डॉक्टर से उम्मीद भी थोड़ी सच्ची हो।

मुझे लगता है मौत से लड़ना बंद करना चाहिए, उससे पहले जीने की तैयारी करनी चाहिए और जब वो आए तो शांति से, गरिमा से उसे जाने देना चाहिए।

बुद्ध की भाषा में मौत एक प्रमोशन है ।

■■■

श्रीकृष्ण दौड़े चले आए

अर्जुन ने अपने-आपको श्रीकृष्ण को समर्पित कर दिया था। अर्जुन होता हुआ भी, नहीं था, इसलिए कि उसने जो कुछ किया, अर्जुन के रूप में नहीं, श्रीकृष्ण के सेवक के रूप में किया। सेवक की चिंता स्वामी की चिंता बन जाती है।

अर्जुन का युद्ध अपने ही पुत्र बब्रुवाहन के साथ हो गया, जिसने अर्जुन का सिर धड़ से अलग कर दिया... और कृष्ण दौड़े चले आए... उनके प्रिय सखा और भक्त के प्राण जो संकट में पड़ गए थे।

अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा बब्रुवाहन ने पकड़ लिया और घोड़े की देखभाल की जिम्मेदारी अर्जुन पर थी। बब्रुवाहन ने अपनी मां चित्रांगदा को वचन दिया था कि मैं अर्जुन को युद्ध में परास्त करूंगा, क्योंकि अर्जुन चित्रांगदा से विवाह करने के बाद लौटकर नहीं आया था और इसी बीच चित्रांगदा ने बब्रुवाहन को जन्म दिया था। चित्रांगदा अर्जुन से नाराज थी और उसने अपने पुत्र को यह तो कह दिया था कि तुमने अर्जुन को परास्त करना है लेकिन यह नहीं बताया था कि अर्जुन ही तुम्हारा पिता है... और बब्रुवाहन मन में अर्जुन को परास्त करने का संकल्प लिए ही बड़ा हुआ। शस्त्र विद्या सीखी, कामाख्या देवी से दिव्य बाण भी प्राप्त किया, अर्जुन के वध के लिए।

और अब बब्रुवाहन ने अश्वमेध के अश्व को पकड़ लिया तो अर्जुन से युद्ध अवश्यम्भावी हो गया। भीम को बब्रुवाहन ने मूर्छित कर दिया और फिर अर्जुन और बब्रुवाहन का भीषण संग्राम हुआ। अर्जुन को परास्त कर पाना जब असंभव लगा तो बब्रुवाहन ने कामाख्या देवी से प्राप्त हुए दिव्य बाण का उपयोग कर अर्जुन का सिर धड़ से अलग कर दिया।

श्रीकृष्ण को पता था कि क्या होने वाला है, और जो कृष्ण को पता था, वही हो गया। वे द्वारिका से भागे-भागे चले आए। दाऊ को कह दिया, 'देर हो गई, तो बहुत देर हो जाएगी, जा रहा हूँ।'

कुंती विलाप करने लगी... भाई विलाप करने लगे... अर्जुन पांडवों का बल था, आधार था, लेकिन जब अर्जुन ही न रहा तो जीने का क्या लाभ। मॉ ने कहा, 'बेटा, तुमने बीच मझधार में यह धोखा क्यों दिया? माँ बच्चों के कंधों पर इस संसार से जाती है और तुम मुझसे पहले ही चले गए। यह हुआ कैसे? यह हुआ क्यों? जिसके सखा श्रीकृष्ण हों, जिसके सारथी श्रीकृष्ण हों, वह यों, निष्प्राण धरती पर नहीं लेट सकता... पर यह हो कैसे गया?' देवी गंगा आई, कुंती को कहा, 'रोने से क्या फायदा, अर्जुन को उसके कर्म का फल मिला है। जानती हो, अर्जुन ने मेरे पुत्र भीष्म का वध किया था, धोखे से। वह तो अर्जुन को अपना पुत्र मानता था, पुत्र का ही प्यार देता था। लेकिन अर्जुन ने शिखंडी की आड़ लेकर, मेरे पुत्र को बाणों की शैया पर सुला दिया था। क्यों? भीष्म ने तो अपने हथियार नीचे रख दिए थे। वह शिखंडी पर बाण नहीं चला सकता था। वह प्रतिज्ञाबद्ध था, लेकिन अर्जुन ने तब भी मेरे पुत्र की छाती को बाणों से छलनी किया। तुम्हें शायद याद नहीं, लेकिन मुझे अच्छी तरह याद है... तब मैं भी बहुत रोई थी। अब अर्जुन का सिर धड़ से अलग है। बब्रुवाहन ने जिस बाण से अर्जुन का सिर धड़ से अलग किया है, वह कामाख्या देवी माध्यम से मैंने ही दिया था। अर्जुन को परास्त कर पाना बब्रुवाहन के लिए कठिन था, आखिर उसने मेरे ही बाण का प्रयोग किया और मैंने अपना प्रतिशोध ले लिया। अब क्यों रोती हो कुंती? अर्जुन ने मेरे पुत्र का वध किया था और अब उसी के पुत्र ने उसका वध किया है, अब रोने से क्या लाभ? जैसा उसने किया वैसा ही पाया। मैंने अपना प्रतिशोध ले लिया।' और प्रतिशोध शब्द भगवान श्रीकृष्ण ने सुन लिया... हैरान हुए... अर्जुन का सिर धड़ से अलग था। और गंगा मैया, भीष्म की मॉ अर्जुन का सिर धड़ से अलग किए जाने को अपने प्रतिशोध की पूर्ति बता रही हैं... श्रीकृष्ण सहन नहीं कर सके... एक नजर भर, अर्जुन के शरीर को, बुआ कुंती को, पांडु पुत्रों को देखा... बब्रुवाहन और चित्रांगदा को भी देखा... कहा, 'गंगा मैया, आप किससे प्रतिशोध की बात कर रही हैं? बुआ कुंती से... अर्जुन से, या फिर एक मां से? माँ कभी माँ

से प्रतिशोध नहीं ले सकती। माँ का हृदय एक समान होता है, अर्जुन की मां का हो या भीष्म की माँ का... आपने किस माँ से प्रतिशोध लिया है?' गंगा ने कहा, 'वासुदेव ! अर्जुन ने मेरे पुत्र का उस समय वध किया था, जब वह निहत्था था, क्या यह उचित था? मैंने भी अर्जुन का वध करा दिया उसी के पुत्र से... क्या मैंने गलत किया? मेरा प्रतिशोध पूरा हुआ... यह एक माँ का प्रतिशोध है।'

श्रीकृष्ण ने समझाया, 'अर्जुन ने जिस स्थिति में भीष्म का वध किया, वह स्थिति भी तो पितामह ने ही अर्जुन को बताई थी, क्योंकि पितामह युद्ध में होते, तो अर्जुन की जीत असंभव थी... और युद्ध से हटने का मार्ग स्वयं पितामह ने ही बताया था, लेकिन यहां तो स्थिति और है। अर्जुन ने तो बब्रुवाहन के प्रहारों को रोका ही है, स्वयं प्रहार तो नहीं किया, उसे काटा तो नहीं, और यदि अर्जुन यह चाहता तो क्या ऐसा हो नहीं सकता था... अर्जुन ने तो आपका मान बढ़ाया है, कामाख्या देवी द्वारा दिए गए आपके ही बाण का... प्रतिशोध लेकर आपने पितामह का, अपने पुत्र का भी भला नहीं किया।'

गंगा दुविधा में पड़ गई। श्रीकृष्ण के तर्कों का उसके पास जवाब नहीं था। पूछा, 'क्या करना चाहिए, जो होना था सो हो गया। आप ही मार्ग सुझाएं।' श्रीकृष्ण ने कहा, 'आपकी प्रतिज्ञा पूरी हो गई, उपाय तो किया ही जा सकता है, कोई रास्ता तो होता ही है। जो प्रतिज्ञा आपने की, वह पूरी हो गई। जो प्रतिज्ञा पूरी हो गई तो अब उसे वापस भी लिया जा सकता है, यदि आप चाहें तो क्या नहीं हो सकता? कोई रास्ता तो निकाला ही जा सकता है।'

गंगा की समझ में बात आ गई और मां गंगा ने अर्जुन का सिर धड़ से जोड़ने का मार्ग सुझा दिया। यह कृष्ण के तर्कों का कमाल था। जिस पर श्रीकृष्ण की कृपा हो, जिसने अपने आपको श्रीकृष्ण को सौंप रखा हो, अपनी चिंताएं सौंप दी हों, अपना जीवन सौंप दिया हो, अपना सर्वस्व सौंप दिया हो, उसकी रक्षा के लिए श्रीकृष्ण बिना बुलाए चले आते हैं। द्वारिका से चलने पर दाऊ ने कहा था, 'कान्हा, अब अर्जुन और उसके पुत्र के बीच युद्ध है, कौरवों के साथ नहीं, फिर क्यों जा रहे हो?' तो कृष्ण ने कहा था, 'दाऊ, अर्जुन को पता नहीं कि वह जिससे युद्ध कर रहा है, वह उसका पुत्र है। इसलिए अनर्थ हो जाएगा और मैं अर्जुन को अकेला नहीं छोड़ सकता।' भगवान और भक्त का नाता ही ऐसा है। दोनों में दूरी नहीं होती और जब भक्त के प्राण संकट में हों, तो भगवान चुप नहीं बैठ सकते।

अर्जुन का सारा भाव हो, और कृष्ण दूर रहें, यह हो ही नहीं सकता। याद रखें, जिसे श्रीकृष्ण मारना चाहें, कोई बचा नहीं सकता और जिसे वह बचाना चाहें, उसे कोई मार नहीं सकता। अर्जुन और श्रीकृष्ण हैं ही एक... नर और नारायण।

■■■

पृष्ठ 17 का शेष.......

उपरोक्त से स्पष्ट हो गया कि किस प्रकार प्राणायाम द्वारा आयुवृद्धि प्राप्त की जा सकती है । प्राणायाम से लाभ सभी आयुवर्ग के मनुष्य – युवा, प्रौढ़ और वृद्ध प्राप्त कर सकते हैं । कहा भी है – ''जब जागो सबेरा'' अर्थात जिन व्यक्तियों ने विशेषत: वरिष्ठ नागरिकों ने अभी तक प्राणायाम का लाभ प्राप्त नहीं किया है वे अब भी किसी योग्य प्रशिक्षक की सहायता से प्राणायाम नियमित रूप से करके अपने शरीर को स्वस्थ व सदाचारयुक्त बनाते हुए दीर्घायु प्राप्त कर सकते हैं । एक बात ध्यान में रखने की आवश्यकता है कि नये अभ्यासी उपरोक्त वर्णन के अनुसार एकदम कुम्भक प्राणायाम करना प्रारम्भ न कर दें क्योंकि इससे पूर्व कपालभाति व नाड़ी शुद्धि आदि प्राणायामों के द्वारा नाड़ी शुद्धि करना आवश्यक है । इसीलिये योग्य प्रशिक्षक की सहायता लेने के बारे में कहा गया है ।

– शिवराज शर्मा
भजन गंज, अजमेर

चौदहवीं पुतली सुनयना की कहानी

चौदहवीं पुतली सुनयना ने जो कथा कही वह इस प्रकार है- राजा विक्रमादित्य सारे नृपोचित गुणों के सागर थे। उन जैसा न्यायप्रिय, दानी और त्यागी और कोई न था। इन नृपोचित गुणों के अलावा उनमें एक और गुण था। वे बहुत बड़े शिकारी थे तथा निहत्थे भी हिंसक से हिंसक जानवरों का वध कर सकते थे।

उन्हें पता चला कि एक हिंसक सिंह बहुत उत्पात मचा रहा है और कई लोगों का भक्षण कर चुका है, इसलिए उन्होंने उस सिंह के शिकार की योजना बनाई और आखेट को निकल पड़े। जंगल में घुसते ही उन्हें सिंह दिखाई पड़ा और उन्होंने सिंह के पीछे अपना घोड़ा दौड़ा दिया। वह सिंह कुछ दूर पर एक घनी झाड़ी में घुस गया। राजा घोड़े से कूदे और उस सिंह की तलाश करने लगे। अचानक सिंह उन पर झपटा, तो उन्होंने उस पर तलवार का वार किया। झाड़ी की वजह से वार पूरे ज़ोर से नहीं हो सका, मगर सिंह घायल होकर दहाड़ा और पीछे हटकर घने वन में गायब हो गया। वे सिंह के पीछे इतनी तेजी से भागे कि अपने साथियों से काफी दूर निकल गए। सिंह फिर झाड़ियों में छुप गया। राजा ने झाड़ियों में उसकी खोज शुरू की। अचानक उस शेर ने राजा के घोड़े पर हमला कर दिया और उसे गहरे घाव दे दिए। घोड़ा भय और दर्द से हिनहिनाया, तो राजा पलटे। घोड़े के घावों से खून का फव्वारा फूट पड़ा।

राजा ने दूसरे हमले से घोड़े को तो बचा लिया, मगर उसके बहते खून ने उन्हें चिन्तित कर दिया। वे सिंह से उसकी रक्षा के लिए उसे किसी सुरक्षित जगह ले जाना चाहते थे, इसलिए उसे लेकर आगे बढ़े। उन्हें उस घने वन में दिशा का बिलकुल ज्ञान नहीं रहा। एक जगह उन्होंने एक छोटी सी नदी बहती देखी। वे घोड़े को लेकर नदी तक आए ही थे कि घोड़े ने रक्त अधिक बह जाने के कारण दम तोड़ दिया। उसे मरता देख राजा दुख से भर उठे। संध्या गहराने लगी थी, इसलिए उन्होंने आगे न बढ़ना ही बुद्धिमानी समझी। वे एक वृक्ष से टिककर अपनी थकान उतारने लगे। कुछ ही क्षणों बाद उनका ध्यान नदी की धारा में हो रहे कोलाहल की ओर गया, उन्होंने देखा दो व्यक्ति एक तैरते हुए शव को दोनों ओर से पकड़े झगड़ रहे हैं। लड़ते-लड़ते वे दोनों शव को किनारे लाए।

उन्होंने देखा कि उनमें से एक मानव मुंडों की माला पहने वीभत्स दिखने वाला कापालिक है तथा दूसरा एक बेताल है जिसकी पीठ का ऊपरी हिस्सा नदी के ऊपर उड़ता-सा दिख रहा था। वे दोनों उस शव पर अपना-अपना अधिकार जता रहे थे। कापालिक का कहना था कि यह शव उसने तांत्रिक साधना के लिए पकड़ा है और बेताल उस शव को खाकर अपनी भूख मिटाना चाहता था।

दोनों में से कोई भी अपना दावा छोड़ने को तैयार नहीं था। विक्रम को सामने पाकर उन्होंने उन पर न्याय का भार सौंपना चाहा तो विक्रम ने अपनी शर्तें रखीं। पहली यह कि उनका फैसला दोनों को मान्य होगा और दूसरी कि उन्हें वे न्याय के लिए शुल्क अदा करेंगे। कापालिक ने उन्हें शुल्क के रूप में एक बटुआ दिया जो चमत्कारी था तथा मांगने पर कुछ भी दे सकता था। बेताल ने उन्हें मोहिनी चंदन काष्ठ का टुकड़ा दिया जिसे घिसकर लगाकर अदृश्य हुआ जा सकता था। उन्होंने बेताल को भूख मिटाने के लिए अपना मृत घोड़ा दे दिया तथा कापालिक को तंत्र साधना के लिए शव। इस न्याय से दोनों बहुत खुश हुए तथा संतुष्ट होकर चले गए।

रात घिर आई थी और राजा को ज़ोरों की भूख लगी थी, इसलिए उन्होंने बटुए से भोजन मांगा। तरह-तरह के व्यंजन उपस्थित हुए और राजा ने अपनी भूख मिटाई। फिर उन्होंने मोहिनी काष्ठ के टुकड़े को घिसकर उसका चंदन लगा लिया और अदृश्य हो गए। अब उन्हें किसी भी हिंसक वन्य जन्तु से खतरा नहीं रहा।

अगली सुबह उन्होंने काली द्वारा प्रदत्त दोनों बेतालों का स्मरण किया तथा अपने राज्य की सीमा पर पहुंच गए। उन्हें महल के रास्ते में एक भिखारी मिला, जो भूखा था। राजा ने तुरन्त कापालिक वाला बटुआ उसे दे दिया, ताकि जिंदगीभर उसे भोजन की कमी न हो।

■■■

पंचतंत्र से प्रेरक कहानी

बन्दर का कलेजा

एक नदी किनारे हरा-भरा विशाल पेड़ था। उस पर खूब स्वादिष्ट फल उगे रहते। उसी पेड पर एक बंदर रहता था। बडा मस्त कलंदर। जी भरकर फल खाता, डालियों पर झूलता और कूदता-फांदता रहता। उस बंदर के जीवन में एक ही कमी थी कि उसका अपना कोई नहीं था। मां-बाप के बारे में उसे कुछ याद नहीं था। न उसके कोई भाई था और न कोई बहन, जिनके साथ वह खेलता। उस क्षेत्र में कोई और बंदर भी नहीं था जिससे वह दोस्ती गांठ पाता। एक दिन वह एक डाल पर बैठा नदी का नजारा देख रहा था कि उसे एक लंबा विशाल जीव उसी पेड़ की ओर तैरकर आता नजर आया। बंदर ने ऐसा जीव पहले कभी नहीं देखा था। उसने उस विचित्र जीव से पूछा 'अरे भाई, तुम क्या चीज हो?' विशाल जीव ने उत्तर दिया 'मैं एक मगरमच्छ हूँ। नदी में इस वर्ष मछलियों का अकाल पड गया है। बस, भोजन की तलाश में घूमता-घूमता इधर आ निकला हूँ।'

बंदर दिल का अच्छा था। उसने सोचा कि पेड़ पर इतने फल हैं, इस बेचारे को भी उनका स्वाद चखना चाहिए। उसने एक फल तोडकर मगर की ओर फेंका। मगर ने फल खाया बहुत रसीला और स्वादिष्ट, वह फटाफट फल खा गया और आशा से फिर बंदर की ओर देखने लगा। बंदर ने मुस्कराकर और फल फेंके। मगर सारे फल खा गया और अंत में उसने संतोष-भरी डकार ली और पेट थपथपाकर बोला 'धन्यवाद, बंदर भाई। खूब छक गया, अब चलता हूँ।' बंदर ने उसे दूसरे दिन भी आने का न्यौता दे दिया।

मगर दूसरे दिन आया। बंदर ने उसे फिर फल खिलाए। इसी प्रकार बंदर और मगर में दोस्ती जमने लगी। मगर रोज आता दोनों फल खाते-खिलाते, गपशप मारते। बंदर तो वैसे भी अकेला रहता था। उसे मगर से दोस्ती करके बहुत प्रसन्नता हुई। उसका अकेलापन दूर हुआ। एक साथी मिला। दो मिलकर मौज-मस्ती करें तो दुगना आनन्द आता है। एक दिन बातों-बातों में पता लगा कि मगर का घर नदी के दूसरे तट पर है जहां उसकी पत्नी भी रहती है। यह जानते ही बंदर ने उलाहन दिया 'मगर भाई, तुमने इतने दिन मुझे भाभीजी के बारे में नहीं बताया। मैं अपनी भाभीजी के लिए रसीले फल देता। तुम भी अजीब निखट्टू हो अपना पेट भरते रहे और मेरी भाभी के लिए कभी फल लेकर नहीं गए।'

उस शाम बंदर ने मगर को जाते समय ढेर सारे फल चुन-चुनकर दिए। अपने घर पहुंचकर मगरमच्छ ने वह फल अपनी पत्नी मगरमच्छनी को दिए। मगरमच्छनी ने वह स्वाद भरे फल खाए और बहुत संतुष्ट हुई। मगर ने उसे अपने मित्र के बारे में बताया। पत्नी को विश्वास न हुआ। वह बोली 'जाओ, मुझे बना रहे हो। बंदर की कभी किसी मगर से दोस्ती हुई है?' मगर ने यकीन दिलाया 'यकीन करो भाग्यवान! वर्ना सोचो यह फल मुझे कहां से मिले? मैं तो पेड़ पर चढने से रहा।' मगरनी को यकीन करना पड़ा। उस दिन के बाद मगरनी को रोज बंदर द्वारा भेजे फल खाने को मिलने लगे। उसे फल खाने को मिलते यह तो ठीक था, पर मगर का बंदर से दोस्ती के चक्कर में दिन भर दूर रहना उसे खलने लगा। खाली बैठे-बैठे ऊंच-नीच सोचने लगी। वह स्वभाव से दुष्टा थी। एक दिन उसका दिल मचल उठा। 'जो बंदर इतने रसीले फल खाता है, उसका कलेजा कितना स्वादिष्ट होगा?' अब वह चालें सोचने लगी। एक दिन मगर शाम को घर आया तो उसने मगरनी को कराहते पाया। पूछने पर मगरनी बोली 'मुझे एक खतरनाक बीमारी हो गई है। वैद्यजी ने कहा हैं कि यह केवल बंदर का कलेजा खाने से ही ठीक होगी। तुम अपने उस मित्र बंदर का कलेजा ला दो।'

मगर सन्न रह गया। वह अपने मित्र को कैसे मार सकता है? न-न, यह नहीं हो सकता। मगर को इनकार में सिर हिलाते देखकर मगरनी जोर से हाय-हाय करने लगी 'तो फिर मैं मर जाऊंगी। तुम्हारी बला से और मेरे पेट में तुम्हारे बच्चे हैं। वे भी मरेंगे। हम सब मर जाएंगे। तुम अपने बंदर दोस्त के साथ खूब फल खाते रहना। हाय रे, मर गई - मैं मर गई।'

पत्नी की बात सुनकर मगर सिहर उठा। बीवी-बच्चों के मोह ने उसकी अक्ल पर पर्दा डाल दिया। वह अपने दोस्त

से विश्वासघात करने, उसकी जान लेने चल पड़ा। मगरमच्छ को सुबह-सुबह आते देखकर बंदर चकित हुआ। कारण पूछने पर मगर बोला 'बंदर भाई, तुम्हारी भाभी बहुत नाराज हैं। कह रही हैं कि देवरजी रोज मेरे लिए रसीले फल भेजते हैं, पर कभी दर्शन नहीं दिए। सेवा का मौका नहीं दिया। आज तुम न आए तो देवर-भाभी का रिश्ता खत्म। तुम्हारी भाभी ने मुझे भी सुबह ही भगा दिया। अगर तुम्हें साथ न ले जा पाया तो वह मुझे भी घर में नहीं घुसने देगी।'

बंदर खुश भी हुआ और चकराया भी 'मगर मैं आऊं कैसे? मित्र, तुम तो जानते हो कि मुझे तैरना नहीं आता।' मगर बोला 'उसकी चिन्ता मत करो, मेरी पीठ पर बैठो। मैं ले चलूंगा न तुम्हें।'

बंदर मगर की पीठ पर बैठ गया। कुछ दूर नदी में जाने पर ही मगर पानी के अंदर गोता लगाने लगा। बंदर चिल्लाया 'यह क्या कर रहे हो? मैं डूब जाऊंगा।' मगर हंसा 'तुम्हें तो मरना है ही।' उसकी बात सुनकर बंदर का माथा ठनका, उसने पूछा 'क्या मतलब?'

मगर ने बंदर को कलेजे वाली सारी बात बता दी। बंदर हक्का-बक्का रह गया। उसे अपने मित्र से ऐसी बेइमानी की आशा नहीं थी। बंदर चतुर था। तुरंत अपने आप को संभालकर बोला 'वाह, तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? मैं अपनी भाभी के लिए एक तो क्या सौ कलेजे दे दूं। पर बात यह है कि मैं अपना कलेजा पेड़ पर ही छोड आया हूँ। तुमने पहले ही सारी बात मुझे न बताकर बहुत गलती कर दी है। अब जल्दी से वापिस चलो ताकि हम पेड़ पर से कलेजा लेते चलें। देर हो गई तो भाभी मर जाएगी। फिर मैं अपने आपको कभी माफ नहीं कर पाऊंगा।'

अक्ल का मोटा मगरमच्छ उसकी बात सच मानकर बंदर को लेकर वापस लौट चला। जैसे ही वे पेड़ के पास पहुंचे, बंदर लपककर पेड़ की डाली पर चढ गया और बोला 'मूर्ख, कभी कोई अपना कलेजा बाहर छोडता है? दूसरे का कलेजा लेने के लिए अपनी खोपड़ी में भी भेजा होना चाहिए। अब जा और अपनी दुष्ट बीवी के साथ बैठकर अपने कर्मों को रो।' ऐसा कहकर बंदर तो पेड़ की टहनियों में लुप्त हो गया और अक्ल का दुश्मन मगरमच्छ अपना माथा पीटता हुआ लौट गया।

सीख : 1. दूसरों को धोखा देने वाला स्वयं धोखा खा जाता हैं।

2. संकट के समय बुद्धि से काम लेना चाहिए।

■■■

पृष्ठ 24 का शेष.......

महातेजस्वी तपस्वी मुनि ने तुरंत ही पुत्र को जलांजलि देकर हाथ जोड़े खड़े हुए मुझसे कहा- 'राजन्! तुम आज ही मुझे भी मार डालो; अब मरने में मुझे कष्ट नहीं होगा। मेरे एक ही बेटा था, जिसे तुमने अपने बाण का निशाना बनाकर मुझे पुत्रहीन कर दिया। तुमने प्रमादवश जो मेरे बालक की हत्या की है, उसके कारण मैं तुम्हें भी अत्यन्त भयंकर एवं भलीभाँति दु:ख देनेवाला शाप दूँगा। राजन्! इस समय पुत्र के वियोग से मुझे जैसा कष्ट हो रहा है, ऐसा ही तुम्हें भी होगा। तुम भी पुत्र शोक से ही काल के गाल में जाओगे। नरेश्वर! क्षत्रिय होकर अनजाने में तुमने वैश्य जातीय मुनि का वध किया है, इसलिये तुम्हें ब्रह्महत्या का पाप तो नहीं लगेगा, तथापि जल्दी ही तुम्हें भी ऐसी ही भयानक और प्राण लेने वाली अवस्था प्राप्त होगी।'

इस प्रकार मुझे शाप देकर वे बहुत देर तक करुणाजनक विलाप करते रहे, फिर वे दोनों पति-पत्नी अपने शरीरों को जलती हई चिता में डालकर स्वर्ग को चले गये।

देवि! इस प्रकार बालस्वभाव के कारण मैंने पहले शब्दवेधी बाण मारकर और फिर उस मुनि के शरीर से बाण को खींचकर जो उनका वधरूपी पाप किया था, वह आज इस पुत्रवियोग की चिन्ता में पड़े हुए मुझे स्वयं ही स्मरण हो आया है।

देवि! अपथ्य वस्तुओं के साथ अन्नरस ग्रहण कर लेने पर जैसे शरीर में रोग पैदा हो जाता है, उसी प्रकार कल्याणि! उस उदार, महात्मा का शाप रूपी वचन इस समय मेरे पास उस पापकर्म का फल देने के लिये आ गया है।'

- साभार वाल्मीकीय रामायण

SSP EVENTS

WEDDING ON WHEELS
Endless Romance of Royal Wedding

PALACE ON WHEELS
A Week In Wonderland

SSP Events, South India's leading wedding planner and artist management agency, In association with the iconic **Palace on Wheels**, proudly presents **Wedding on Wheels**—a unique luxury event experience like no other!

Create cherished memories with **Wedding on Wheels**, offering exclusive and unforgettable celebrations aboard the majestic Palace on Wheels. Reserve your extraordinary event today!

Gold Award for Best Artist Management Company by BITA @ Baku - Azerbaijan.

For More Details

SSP EVENTS

Mo: 93472 97988 | 83411 27988
Mail: ssp.event@yahoo.com
Instagram: sspeventshyd | events.on.wheels
Web Page: eventsonwheels.in

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

जवाहरलाल उपाध्याय
संगठन मंत्री, महासभा
ट्रस्टी गौतमाश्रम पुष्कर
ट्रस्टी गौतमाश्रम हरिद्वार
उपाध्यक्ष गौतमाश्रम त्र्यंबकेश्वर
ट्रस्टी अ.भा.म.गौ.शै.पा. न्यास

J L Builders

JDH HARDWARE

जेडी हार्डवेयर

रवि उपाध्याय

गौरव उपाध्याय

गर्वित उपाध्याय

जवाहरलाल उपाध्याय

'गौरव' 76बी, मानसरोवर, शंकर नगर, जोधपुर- 342008 (राज.)

मो. 94141-30222, 96108-30222, 94147-53555, 96601-78191

श्रीमान्

प्राप्त नहीं करने पर निम्न पते पर वापस भेजें :
SHRI PUSHKAR GAUTAM ASHRAM
Pushkar-Ajmer (Raj.)

मुद्रक : श्री आर्य प्रिन्टर्स, केसरगंज, अजमेर फो. 9414336820